वर्ष 25 | अंक 2 | सितम्बर, 2023
ISSN No. 2582-4546
₹ 30

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

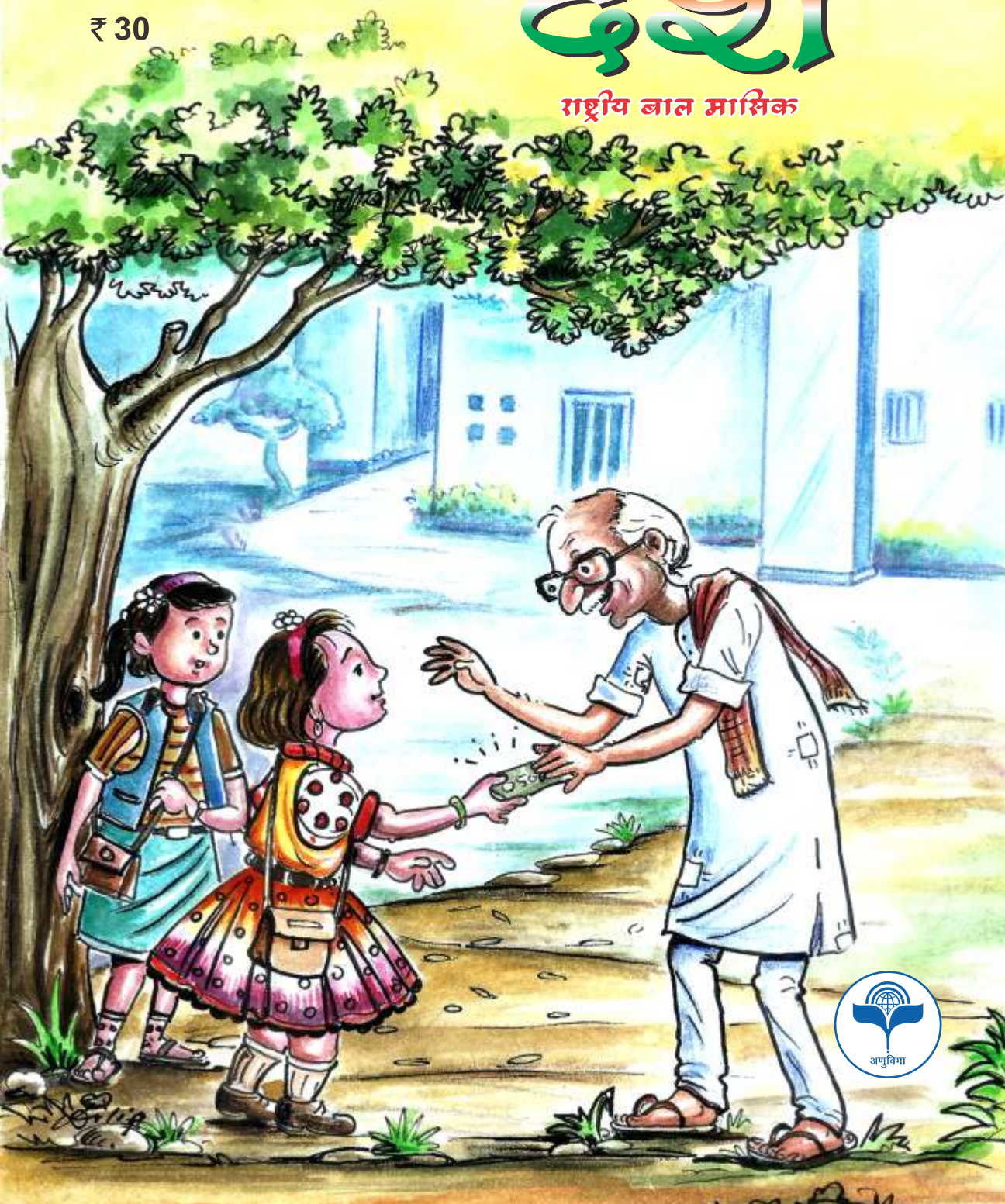

क्या आप जानते हो ?

बच्चो, लगभग 200 वर्ष पूर्व हुए आविष्कार के बाद से ही साइकिल दुनियाभर में लोगों का पसन्दीदा वाहन रहा है। क्या आप जानते हो कि कुछ नया करने के शौकीन लोगों ने साइकिल के अजब-गजब मॉडल बनाए हैं, जिन्हें देखकर आश्चर्य भी होता है और हँसी भी आती है। आइए, देखते हैं ऐसे ही कुछ नमूने...

साइकिल जहाँ करोड़ों लोगों के जीवन को आसान बनाती है,वहीं खेल–पसन्द लोगों में भी साइकिल आकर्षण का केन्द्र है। दुनिया की सबसे बड़ी साइकिल रेस 'टूर दे फ्रांस' को माना जाता है। Giro d' Italia, Tour de France और Vuelta a Espana दुनिया की सबसे बड़ी और प्रसिद्ध रेस में शामिल हैं जो पिछले लगभग 100 वर्षों से क्रमशः इटली, फ्रांस और स्पेन में आयोजित होती हैं।

प्यारे बच्चो,
आपकी अपनी पत्रिका 'बच्चों का देश' का यह रजत-जयन्ती वर्ष है।
यानी प्रकाशन का 25 वाँ वर्ष।
आप बच्चों का प्यार ही इसकी ताकत है।
पत्रिका की हर रचना को ध्यान से पढ़ो।
जो भी विचार अच्छा लगे, उसे अपने जीवन में अपनाने का प्रयास करो।
आपके मन का कोई विचार, कोई सुझाव,
अपनी पसन्द और नापसन्द भी आप हमें लिख कर भेज सकते हो।

इस माह का एक विचार आपके लिए -

स्वयं को
कमजोर समझना
सबसे बड़ा **पाप** है।

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष : 25 अंक : 2 सितम्बर, 2023

सम्पादक : संचय जैन
सह सम्पादक : प्रकाश तातेड़
कार्यालय प्रभारी : चन्द्रशेखर देराश्री
ग्राफिक्स : गजेन्द्र दाहिमा
चित्रांकन : सुशील कुमार, दिलीप शर्मा

अध्यक्ष : अविनाश नाहर
महामन्त्री : भीखम सुराणा
कोषाध्यक्ष : राकेश बरड़िया
प्रबन्ध सम्पादक : निर्मल राँका, पंचशील जैन
प्रकाशन मन्त्री : देवेन्द्र डागलिया
संयोजक, पत्रिका प्रसार : सुरेन्द्र नाहटा

प्रकाशक :
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
www.anuvibha.org
9414343100, 9351552651

सहयोगी संस्थान :
भागीरथी सेवा प्रन्यास, जयपुर

- 'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है।
- लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है।
- समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कोलोनी, उदयपुर (राज.) के लिए चौधरी ऑफसेट प्रा. लि. उदयपुर से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित।

आलेख

08 **राज्य पक्षी : नीलकंठ**
डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी

11 **गोविन्द बल्लभ पन्त**
राजकुमार निजात

34 **मेरा देश : गाँव विशेष**
शिखर चन्द जैन

37 **दशरथ माँझी**
सीताराम गुप्ता

38 **ब्रह्मकमल**
शिवचरण चौहान

विविधा

वर्ग पहेली : राधा पालीवाल – 17, विस्मयकारी भारत : रवि लायटू –14, बूझो तो जानें : प्रवीण कुमार – 21, दिमागी कसरत : प्रकाश तातेड़ – 33, तसवीर जोड़ो : राकेश शर्मा राजदीप–28, चित्र कथा : संकेत गोस्वामी – 48, रंग भरो : चाँद मोहम्मद घोसी – 49

कहानी

09 **एक ने बचाया तीन को**
रजनीकान्त शुक्ल

15 **बहादुर मुस्कान**
श्याम बिहारी महतो

19 **हँसगुल्ले का स्वाद**
राजा चौरसिया

22 **रामू काका की ईमानदारी**
डॉ. अलका जैन आराधना

23 **आओ, मनाएँ हिन्दी दिवस**
ताराचंद मकसाने

31 **बस एक मिनट**
हरिन्दर सिंह गोगना

35 **चूहे जैसा आदमी का जीवन**
रेनू सैनी

39 **दोस्ती की नींव**
रंजना मिश्रा

कविता

08 **रजत जयन्ती वर्ष की बधाई**
गौरीशंकर वैश्य विनम्र

10 **अच्छे इनसान पिता**
नलिन खोईवाल

10 **पढ़कर नाम कमाएँगे**
मनमोहन गुप्ता

18 **कितना अच्छा नीम**
योगेन्द्र प्रताप मौर्य

18 **बातूनी खीरा**
अनीता गंगाधर शर्मा

30 **बन्दर मामा**
चक्रधर शुक्ल

30 **खुशियों की सौगात लुटाती**
डॉ. सतीश चन्द्र भगत

स्तम्भ

सम्पादक की पाती – 06, महाप्रज्ञ की कथाएँ – 07, ओल्ड इज गोल्ड – 26, दस सवाल : दस जवाब, जरा हँस लो,–29, , अन्तर ढूँढ़िये – 30, सुडोकू–32, व्हाट्सएप कहानी– 33, पढ़ो और जानो, उत्तरमाला– 41, कलम और कूँची– 42, नन्हा अखबार – 44, बाल कलम – 46, जीवन विज्ञान के प्रयोग – 47, किड्स कॉर्नर– 49,

सम्पादक की पाती

प्यारे बच्चो,

ध्रुव और विवेक अच्छे दोस्त थे। एक बार रविवार के दिन वे अपने साथियों के साथ कैरम खेल रहे थे। ध्रुव कुछ गरम स्वभाव का था। कभी–कभी छोटी–सी बात पर भी उसे गुस्सा आ जाता था। आज भी ऐसा ही हुआ। जैसे ही विवेक ने कैरम की एक चाल चली, ध्रुव उखड़ गया। "विवेक, तुम चालाकी कर रहे हो। चीटर हो तुम!'' यह कहते हुए ध्रुव खड़ा हो गया। अन्य दोनों साथियों ने बीच–बचाव करने की कोशिश की तो ध्रुव उन पर भी गुस्सा हो गया और अपशब्द कहने लगा।

विवेक ध्रुव के गुस्सैल स्वभाव को जानता था लेकिन आज तो वह आपे से ही बाहर हो रहा था। ध्रुव के विपरीत विवेक एक शान्त व सौम्य स्वभाव का बच्चा था। कुछ देर समझाने के बाद जब उसे लगा कि ध्रुव मानने वाला नहीं है और लड़ने पर उतारू है तो उसे एक युक्ति सूझी। उसने कहा– "ध्रुव, चल आज हम दोनों दो–दो हाथ कर ही लेते हैं लेकिन पहले ये गेम पूरा करना होगा।'' विवेक का इशारा समझ कर दोनों साथियों ने भी उसकी बात का समर्थन किया। ध्रुव गुस्से में तमतमा रहा था लेकिन सबके कहने पर मान गया।

गेम पूरा होने में 10–12 मिनट लग गए। विवेक बड़े ही शान्त भाव से बोला– "देखो ध्रुव, अब भी तुम मुझ से लड़ना चाहते हो तो मैं यहाँ से चले जाना पसन्द करूँगा।" यह कहकर विवेक जाने के लिए खड़ा हो गया। नाराजगी अब भी ध्रुव के चेहरे पर झलक रही थी लेकिन उसका गुस्सा अब शान्त हो गया था। उसे अपनी गलती का अहसास भी हो रहा था और वह विवेक की आँख से आँख नहीं मिला पा रहा था। जमीन की ओर आँखें गड़ाए ही उसने विवेक से माफी माँगी और उठकर चला गया।

बच्चो, क्या तुम्हें पता है कि इस घटना के बीस साल बाद क्या हुआ? ध्रुव और विवेक करीब 10–12 वर्षों के बाद मिले थे। हाय–हैलो हुआ और दोनों ने एक दूसरे की जिन्दगी के बारे में जाना। बच्चो, विवेक एक बहुत ही सफल प्रोफेशनल बन गया था और उसकी अपनी जिन्दगी, परिवार सब कुछ बहुत ही सुख–शान्ति के साथ चल रहा था। दूसरी ओर, ध्रुव अपनी आर्थिक स्थिति को सँभालने की कोशिश कर रहा था और पारिवारिक झगड़ों व तनाव से परेशान था।

बच्चो, अपने गुस्से पर नियन्त्रण नहीं रख पाने की एक बुरी आदत ने ध्रुव के जीवन को मुश्किलों से भर दिया था। बचपन में ही हम यदि अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण करना सीख जाएँ तो हमें जीवन में आगे बढ़ने और सफलताएँ हासिल करने से कोई नहीं रोक सकता। आपके सफल जीवन की शुभकामनाओं के साथ,

आपका ही,
संचय

महाप्रज्ञ की कथाएँ

नेतागिरी

एक खरगोश के पीछे दो बाघ दौड़े। वह भागकर एक गुफा में घुस गया। वहाँ एक लोमड़ी बैठी थी। उसने पूछा– ''तू प्राणों को हथेली पर लिए कैसे दौड़ आया?''

''बहन! जंगल के सभी जानवर मिलकर मुझे नेता बनाना चाहते थे। मैं इस पचड़े में पड़ना नहीं चाहता था। इसलिए बड़ी कठिनाई से उनके चँगुल से निकल कर आया हूँ।'' खरगोश ने अपनी भयपूर्ण भावना को छिपाते हुए कहा।

लोमड़ी– ''भैया! नेतागिरी में तो बड़ा स्वाद है।'' खरगोश– ''बहन! वह पद तुम ले लो, मुझे तो नहीं चाहिए।'' लोमड़ी का मन ललचाया और वह नेता का पद लेने गुफा के बाहर निकली। वहाँ बाघ खड़े ही थे। उन्होंने उसके दोनों कान पकड़ लिये। वह कानों को गँवाकर तुरन्त लौट आयी। खरगोश बोला– ''तुम अभी वापस क्यों चली आयी?'' लोमड़ी– ''नेतागिरी में खींचतान तो बहुत है।''

कथाबोध : नेतागिरी में खींचतान बहुत है। पर आज उसकी भूख किसको नहीं है। अपनी योग्यता को विकसित किये बिना नेता बनने का यत्न करना मूर्खता है।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 350 रु.
त्रैवार्षिक : 900 रु.
पंचवार्षिक : 1500 रु.
दस वर्ष : 3000 रु.
पंद्रह वर्ष : 7500 रु.
विदेश के लिए वार्षिक शुल्क $ 20

बच्चों का देश

सदस्यता शुल्क भेजने के तीन तरीके -
नकद / चैक / ऑनलाइन

ANUVRAT VISHWA BHARTI SOCIETY
IDBI Bank BRANCH Rajsamand
A/c No. : 104104000046914
IFSC : IBKL0000104

UPI | RAZOR PAY
https://rzp.io/l/uGTBPsrRx

Send Payment Information On Whatsapp No. 9116634513

हिन्दी नाम – नील कंठ
अँग्रेजी नाम – Indian Roller
वैज्ञानिक नाम –Coracias benghalensis

उड़ीसा, कर्नाटक व तेलंगाना का राज्य पक्षी : नीलकंठ

यह एक भड़कीले रंगों वाला सुन्दर पक्षी है। इसका कंठ या गला नाम के अनुरूप नीला नहीं होता लेकिन गले एवं वक्ष वाले भाग को छोड़कर लगभग सारा शरीर ही नीले रंग की आभा लिए होता है। इसका शरीर करीब 38 सेन्टीमीटर लम्बा, इकहरा एवं फुर्तीला होता है। इसकी पूँछ दो भागों में विभक्त होती है। इसकी पीठ और ऊपर का भाग लाली लिए हुए भूरा, पेट और नीचे का भाग नीला, आँखों के नीचे, गले के दोनों ओर का भाग गुलाबी तथा सिर एवं गर्दन के बीच का भाग हल्का नीला होता है। इसकी नीली चोंच नुकीली तथा नीचे की ओर मुड़ी हुई होती है। यह हमेशा अकेले ही विचरण करता है और छोटे–छोटे कीड़े–मकोड़े, चूहे, छिपकलियाँ, टिड्डे आदि का शिकार करता है। यह पक्षी बड़ा साहसी, निडर और लड़ाकू होता है।

डॉ. कैलाश चन्द सैनी
जयपुर (राजस्थान)

रजत जयन्ती वर्ष की बधाई

'बच्चों का देश' अवतरण का, शुभ रजत जयन्ती वर्ष है।
बच्चों की लोकप्रिय पत्रिका, देती अनुपम हर्ष है।
बनी अभिन्न अंग है स्नेहिल, अणुव्रत विश्व भारती की।
शक्ति, ऊर्जा, अर्थ दे रही, जगमग ज्योति आरती की।

दिन दूनी और रात चौगुनी, मिली सफलता सर्जन को।
'बच्चों का देश' के प्रिय पाठक, आतुर रहते ज्ञानार्जन को।
घर के सदस्य सब पढ़ते हैं, ज्योंही पत्रिका है आती।
सबको देती है दिशा नई, प्रियवर 'सम्पादक की पाती'।

पत्रिका के सारे स्निग्ध पृष्ठ, पूर्णतः सजे हैं चित्रों से।
हँस-हँसकर रंग विविध मोहक, मिलवाते हैं नव मित्रों से।
लेख, कहानी, कविता रोचक, प्रेरक वचन लाभप्रद मानें।
वर्ग पहेली, दिमागी कसरत, सुडोकू, बूझो तो जानें।

'पेंसिल आर्ट वर्क' अनुपम है, देती सीख वाट्सएप कहानी।
पढ़ो और जानो, प्रश्नोत्तर, 'कलम और कूँची' जानी-मानी।
दो चित्रों में ढूँढ़ें अन्तर, मनोरंजन है 'चित्र पहेली'।
नन्हा अखबार, किड्स कार्नर, बाल कलम है सखी सहेली।

पत्रिका का जन्मदिवस पावन, पंद्रह अगस्त को है आता।
अर्पित है शुभकामना-बधाई, 'हिप- हिप हुर्रे' मन है गाता।
सब मित्रों से नम्र निवेदन, 'बच्चों का देश' अवश्य पढ़ें ।
नित बौद्धिक विकास के द्वारा, सतत श्रेष्ठ व्यक्तित्व गढ़ें।

गौरीशंकर वैश्य विनम्र
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

एक ने बचाया तीन को

केरल के त्रिशूर जिले में रीमा और कार्थियानी नाम की दो महिलाएँ दोपहर बाद तालाब पर कपड़े धोने और नहाने के लिए जा रही थीं। जैसे ही वे घर से निकलीं तभी कार्थियानी की सात साल की बेटी मन्जू उससे आकर लिपट गई। ''कहाँ जा रही हो? मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी।'' उसने आग्रह करते हुए कहा। ''सुनो मन्जू तुम यही घर पर खेलो। हम लोग अभी थोड़ी देर में कपड़े धोकर आ जाएँगे। वहाँ पर अकेली बोर हो जाओगी।'' कार्थियानी ने बेटी को समझाते हुए कहा। ''नहीं, नहीं, मुझे तो साथ चलना है।'' मन्जू ने जिद करते हुए कहा। ''ले चलो न इसे।'' रीमा ने कहा।

''अरे कहाँ ले चलें। दूर है तालाब। अभी गोदी में चढ़ने को तैयार हो जाएगी। कपड़े भी लादो और इन्हें भी लादो।'' कार्थियानी ने अपनी परेशानी बताई। ''नहीं मैं गोदी चढ़ने की नहीं कहूँगी। पैदल–पैदल ही चलूँगी। मुझे ले चलो।'' मन्जू ने समस्या का समाधान बताते हुए कहा। ''तो ठीक है। हमें क्या? चलो फिर।'' कार्थियानी ने हथियार डालते हुए स्वीकृति प्रदान की। मन्जू खुश होकर उछलती हुई उनके साथ साथ चल दी।

तालाब के किनारे पहुँच कर रीमा और कार्थियानी ने कपड़े धोना शुरू कर दिया। मन्जू के लिए वहाँ कोई काम नहीं था तो वह क्या करती? कुछ देर तक तो वह अपनी माँ को कपड़े धोते हुए देखती रही। फिर उठकर वहीं तालाब के आसपास घूमकर वहाँ का जायजा लेने लगी। उसकी माँ कार्थियानी और रीमा कपड़े धोने के साथ–साथ आपस में घर परिवार की बातें भी करती जा रही थीं। बीच में कार्थियानी ने नजर उठाकर जब मन्जू को बोर होते देखा तो बोली– ''तभी मैंने बोला था कि वहीं खेलो। अब यहाँ अकेली रह गई। अब

देखें पृष्ठ 13...

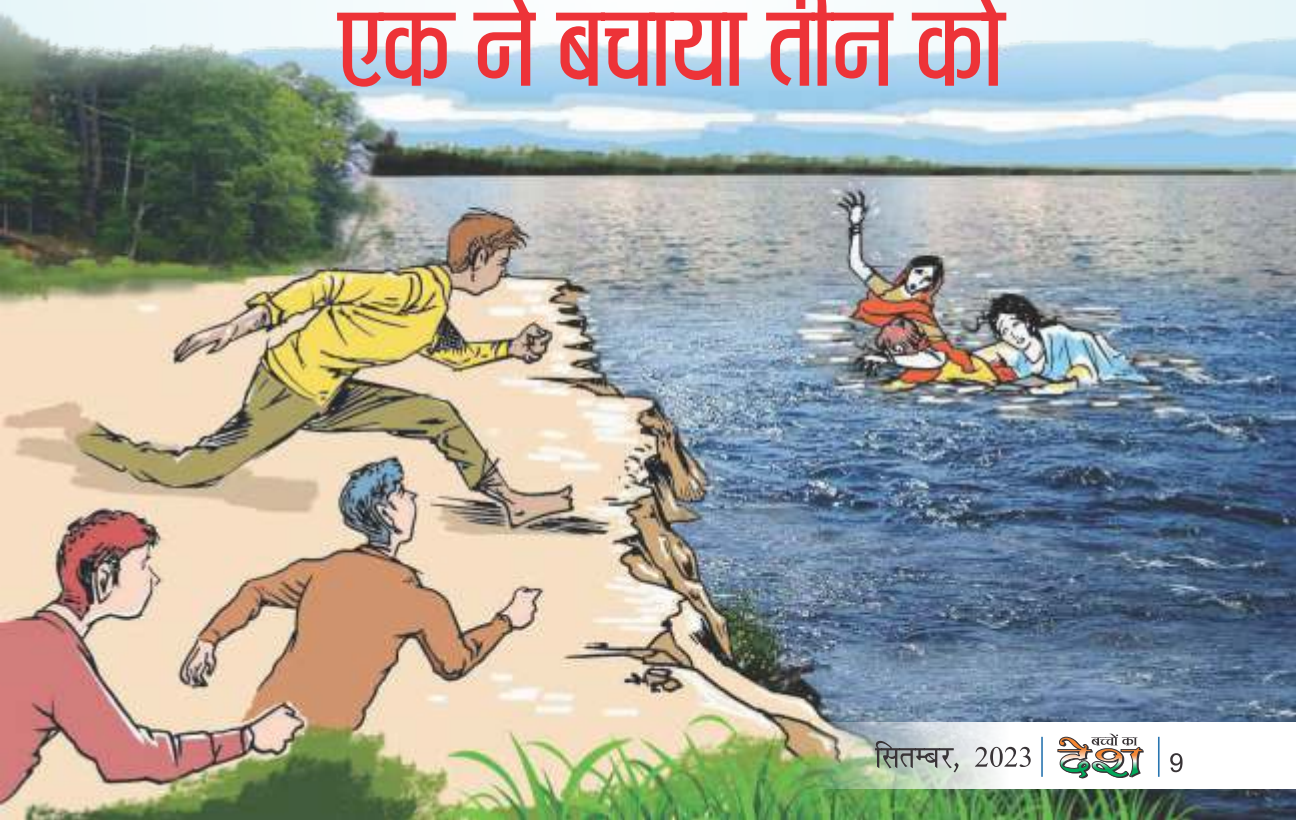

अच्छे इनसान पिता

पूर्ण करें सब अरमान पिता,
हम बच्चों के भगवान पिता।
घर मन्दिर है घर मस्जिद भी,
माँ सावन तो रमजान पिता।।

ना कोई अस्तित्व हमारा,
पूर्ण हमारी पहचान पिता।
निर्धनता में जीवन जीते,
हम बच्चों के धनवान पिता।।

खुद भूखे–प्यासे रह जाते,
हमें खिलाते पकवान पिता।
सब कुछ न्योछावर कर देते,
कितने हम पर कुरबान पिता।।

ख्वाब हमारे पूरे करते,
खाक हो गए दरबान पिता।
ज्यादा देर खफा ना रहते,
घर–भर की है मुस्कान पिता।।

खुशियाँ हमको कितनी देते,
खुद के गम से अनजान पिता।
दुनिया भर के अपमान सहें,
पर माँ का है अभिमान पिता।।

सबकी सुनते अपनी न कहें,
कितने सद्गुण की खान पिता।
सबका रखते हैं ध्यान विपुल,
कितने अच्छे इनसान पिता।।

नलिन खोईवाल
इंदौर (मध्य प्रदेश)

पढ़कर नाम कमाएँगे

मनमोहन गुप्ता
भरतपुर (राजस्थान)

चीकू, बंटी सब आ जाओ,
मिलकर पढ़ने जाएँगे।
मम्मी से ले आना खाना,
हम छुट्टी में खाएँगे।

पढ़ लिखकर होशियार बनेंगे,
हम सब बस्ती के बच्चे।
सारे जग को दिखला देंगे,
देखो, हम कितने अच्छे।

अब जल्दी से मम्मी मुझको,
ड्रेस फटाफट पहनाओ।
दादा जी ने दिलवायी जो,
कॉपी–किताबें सब लाओ।

हम सब साथी, इस जीवन में,
पढ़कर नाम कमाएँगे।
ज्ञान का सूरज उग आया है,
सबको ये बतलाएँगे।

बालक बना महान

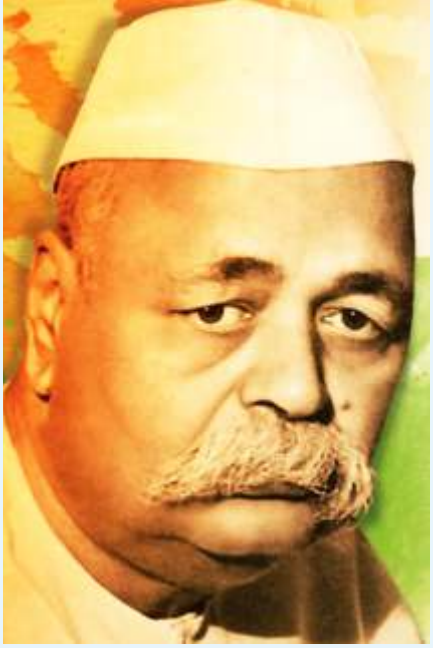

महान देशभक्त, कुशल प्रशासक

गोविन्द बल्लभ पन्त

हमारी गौरवशाली भारत भूमि पर समय–समय पर महान व्यक्तित्व एवं महापुरुष पैदा होते रहे हैं। उन्हीं में से महान देशभक्त, कुशल प्रशासक, उच्च कोटि के वक्ता, नाटककार और लेखक उदारमना पंडित गोविन्द बल्लभ पन्त भी एक थे। उनका जन्म एक सितम्बर 1887 में पिता श्री मनोरथ पन्त तथा माता श्रीमती गोविन्दी बाई के घर गाँव खूँट जिला अल्मोड़ा में हुआ। उनके पिता की बचपन में ही मृत्यु हो गई थी इसलिए उनकी मौसी और नाना श्री बद्रीदत्त जोशी ने उनका लालन–पालन किया।

आरम्भिक जीवन व शिक्षा

शुरू के दस वर्षों तक उनकी पढ़ाई घर में ही हुई। वे बचपन से ही पढ़ाई में बहुत होशियार थे। उस समय भारत में स्वतन्त्रता आन्दोलन गांधी जी के नेतृत्व में बड़ा जोर शोर से चल रहा था। इसलिए पढ़ाई के साथ–साथ वे कॉंग्रेस पार्टी से स्वयंसेवक के रूप में जुड़ गए।

सन 1907 में उन्होंने म्योर सेंट्रल कॉलेज इलाहाबाद से बीए की डिग्री प्रथम श्रेणी में प्राप्त की। उनकी इस उपलब्धि पर कॉलेज द्वारा उन्हें "लेम्सडेन अवार्ड" से सम्मानित किया गया। इसके बाद सन 1909 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से कानून की डिग्री सर्वोच्च अंकों से प्राप्त की।

वकालत के साथ समाजसेवा

उन्होंने 1905 में अल्मोड़ा छोड़ दिया था लेकिन 1910 में दोबारा अल्मोड़ा आकर उन्होंने वकालत शुरू की। शिक्षा तथा साहित्य के प्रति जनता में जागरूकता पैदा करने के लिए उन्होंने सन 1910 में "प्रेम सभा" संस्था का गठन किया। जनता के बीच में लोकप्रियता के कारण इस संस्था के प्रभाव से ब्रिटिश स्कूलों को काशीपुर छोड़ना पड़ा।

पंडित जी सन 1909 में इलाहाबाद हाईकोर्ट के एडवोकेट बन गए थे। 1910 ई में काशीपुर के मुकदमे डिप्टी कलेक्टर की कोर्ट में पेश होते थे। 6 महीने नैनीताल और 6 महीने काशीपुर अदालत लगती थी। उनके पिता रेवेन्यू कलेक्टर थे। उस कोर्ट के शुरुआती मुकदमों में उन्होंने कई बड़े मुकदमे जीते और वकील के रूप में अपना नाम कमाया।

लेखन से रहा गहरा रिश्ता

पंडित गोविन्द बल्लभ पन्त एक अच्छे नाटककार और लेखक थे। उन्होंने अपना प्रथम नाटक "वरमाला" लिखा जो कि मार्कंडेय पुराण की कथा पर आधारित था। उन्होंने मेवाड़ की पन्नाधाय के अलौकिक त्याग व ऐतिहासिक दृष्टिकोण के प्रभाव से "राजमुकुट" नामक नाटक की रचना की। उन्होंने "अंगूर की बेटी" नामक नाटक भी लिखा जिसमें शराब के दुष्परिणामों को दिखाया गया था। यह एक सामाजिक नाटक था जिसका जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा। इसके बाद उन्होंने कई नाटक लिख डाले। "सिंदूर की होली", "अंतापुर का छिद्र", "ययाति", "सुहाग बिंदी" आदि नाटक उनके बहुत लोकप्रिय हुए और जिन्हें कई बार मंचों पर खेला गया।

जनसेवक की भूमिका में

उन दिनों इलाहाबाद अपनी राजनीतिक चेतना के लिए बहुत चर्चा में था। वहाँ मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, सर तेज बहादुर सप्रू, सतीश चन्द्र बनर्जी, सुन्दरलाल आदि बड़ी राजनीतिक हस्तियों का आना जाना रहता था।

1916 में काशीपुर एरिया कमेटी का अध्यक्ष पंडित गोविन्द बल्लभ पन्त को बनाया गया। पन्त जी ने कुमाऊँ में निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का प्रबन्ध करवाया। इससे कुमाऊँ में उनका मान सम्मान बहुत बढ़ गया था। सन 1914 में उन्होंने उदय राज हिन्दू हाई स्कूल की स्थापना की थी लेकिन राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने के आरोप में अँग्रेजों ने इस स्कूल के विरुद्ध नीलामी का आदेश पारित कर दिया। अतः स्कूल को बचाने के लिए उन्होंने लोगों से चन्दा माँग कर जुर्माना भरा और स्कूल को बन्द होने से बचा लिया।

स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूदे पन्त जी

दिसम्बर 1921 में गांधी जी के आह्वान पर अँग्रेजों से असहयोग आन्दोलन में पंडित गोविन्द बल्लभ पन्त राजनीति में उतरे। नौ अगस्त 1925 को काकोरी कांड हुआ जिसमें सरकारी खजाने को स्वतन्त्रता सेनानियों द्वारा लुटा गया था। उस कांड के मुकदमों के पैनल में पंडित गोविन्द बल्लभ पन्त का नाम भी सहयोगी वकील के रूप में था।

1923 में उन्होंने नैनीताल से स्वराज पार्टी के टिकट पर विधान परिषद का चुनाव लड़ा और जीत गए। 1927 में राम प्रसाद बिस्मिल व उनके तीन अन्य साथियों को जब फाँसी की सजा हुई तो उन्हें फाँसी के फंदे से बचाने के लिए पंडित मदन मोहन मालवीय के साथ पन्त जी ने वायसराय को पत्र लिखा। बाद में उन्हें काँग्रेस कमेटी उत्तर प्रदेश का अध्यक्ष बना दिया गया। 1928 में जब साइमन कमीशन भारत आया तो काँग्रेस ने उसका बहिष्कार किया। जब नमक सत्याग्रह आन्दोलन शुरू हुआ तों उन्हें इस आन्दोलन में भाग लेने के कारण देहरादून की जेल में भेज दिया गया। स्वतन्त्रता आन्दोलन की कई घटनाओं में 1937 से 1939 तक वे जेल में रहे।

1929 में गांधी जी काशीपुर आए थे। तब पन्त जी ने चरखा संघ की स्थापना की थी जो जनता के बीच में बहुत लोकप्रिय रहा। उन दिनों कुमाऊँ परिषद की भी स्थापना हुई थी। 1934 में रुहेलखंड–कुमाऊँ क्षेत्र के केन्द्रीय विधानसभा के लिए वे निर्विरोध चुन लिए गए। 17 जुलाई 1934 को पन्त जी रुहेलखंड–कुमाऊँ संयुक्त प्रान्त के प्रथम मुख्यमन्त्री बनाए गए।

आजादी के बाद पन्त जी की सेवाएँ

सन 1946 में पन्त जी को उत्तर प्रदेश का मुख्यमन्त्री चुन लिया गया। वे 1955 तक उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री रहे। वे कानून के ज्ञाता व राजनेता होने के साथ–साथ एक कुशल अर्थशास्त्री भी थे। 1955 में उन्हें केन्द्र में गृहमन्त्री बनाया गया। उस समय भाषायी आधार पर उन्होंने राज्यों का पुनर्गठन किया तथा केन्द्र व राज्यों की सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी को प्रश्रय दिया।

उनके गृहमन्त्री के कार्यकाल में सन 1957 में भारत रत्न की स्थापना की गई। केन्द्र सरकार द्वारा महान देशभक्त, कुशल प्रशासक, सफल वक्ता, उदारमना व्यक्तित्व के कारण उन्हें देश का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न प्रदान किया गया। अन्ततः 7 मार्च 1961 में गृहमन्त्री पद पर रहते हुए माँ भारती के सपूत का देहान्त हो गया।

राजकुमार निजात
सिरसा (हरियाणा)

'एक ने बचाया तीन को' पृष्ठ 9 का शेष....

सुनो तालाब की तरफ मत जाना दूर–दूर ही खेलो। कपड़े धोकर अभी जल्दी घर चलेंगे।''

अब मन्जू भी सोच रही थी कि उसने यहाँ आने की जिद करके गलती की है। वह यहाँ किसके साथ खेले? अकेली वापस भी नहीं जा सकती। तब मन्जू नजर बचाकर तालाब में उतरने लगी। उसे तैरना तो आता नहीं था। उसे अन्दाजा नहीं था कि जहाँ वह उतरी थी वहाँ पर अगला पैर बढ़ाते ही काफी गहरा गड्ढ़ा था। पैर बढ़ाते ही उसका सन्तुलन बिगड़ा और वह गहरे पानी में चली गई।

वह समझ गई कि वह खतरे में फँस चुकी है तो उसने मदद के लिए पुकार लगाई। जिसे सुनकर बातें करते हुए उसकी माँ कार्थियानी ओर रीमा का ध्यान उसकी ओर गया। जैसे ही उनकी नजर डूबती हुई मन्जू पर गई तो कार्थियानी के होश उड़ गए। कपड़े धोना छोड़कर वे दोनों वहीं से चिल्लाती हुई दौड़ पड़ीं। कार्थियानी तो मानो पागल हो गई वह दौड़ती हुई आईं और मन्जू को बचाने के लिए तालाब में कूद गई। मगर मन्जू को बचाने की बजाय वह खुद डूबने लगी।

बेटी और माँ दोनों को डूबता देखकर रीमा ने भी उन दोनों को बचाने के लिए तालाब में छलाँग लगा दी। मगर उसे भी या तो तैरना नहीं आता था या फिर हड़बड़ी में वह अपने होश खो बैठी और बचाने की जगह खुद डूबने लगीं। उधर इन दोनों महिलाओं की चीख पुकार सुनकर पास ही धान के खेत में खेल रहे लड़कों का ध्यान इनकी ओर गया। निगाहें घुमाकर देखा तो तालाब में डूबती लड़की दिखाई दी और फिर इससे पहले वे कुछ और समझें देखते–देखते उसे बचाने के लिए कूदने वाली ये दोनों महिलाएँ भी उस लड़की के साथ तालाब में डूबने लगी।

पत्रिका प्रकाशन विशेष सहयोगी

अणुव्रत आन्दोलन के 75वें वर्ष पर अणुव्रत अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अणुव्रत दर्शन को मासिक पत्रिकाओं के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने में श्री बिमल बैंगाणी, मेनेजिंग डाइरेक्टर, जैन लेबल्स प्रा. लि. एवं श्रीमती मोहिनी देवी बैंगाणी (बीदासर-दिल्ली) द्वारा दिये गये विशेष सहयोग हेतु अणुविभा आपका हृदय से आभारी है।

वे तुरन्त दौड़ते हुए तालाब के किनारे पहुँचे तो उनमें से एक सनीश के.एस. तुरन्त तालाब में कूद गया। वगैर यह सोचे कि उन तीन–तीन लोगों को वह पन्द्रह वर्ष का बालक अकेला कैसे तालाब से निकाल पाएगा। अब सोचना और घबराना कैसा? वह तेजी से तैरता हुआ उनकी ओर गया तो सबसे पहले उसके सामने सबसे बाद में कूदने वाली रीमा आईं। उसने सावधानीपूर्वक रीमा का हाथ मजबूती से पकड़ लिया। वह उस हाथ को पकड़कर किनारे की ओर तैरने लगा।

उसे नहीं पता था कि कार्थियानी ने पीछे से रीमा के कपड़ों को पकड़ रखा है और मन्जू कर्थियानी के पैरों से चिपकी हुई थी। इस तरह सनीश के एक बार के प्रयास में ही वे तीनों एक साथ तालाब के किनारे आ गईं। उन तीनों को प्राथमिक सहायता दी गई और वे स्वस्थ हो गईं। सनीश के द्वारा तुरन्त मिलने वाली उस मदद से उन तीनों की जान बच गई थी। सनीश की इस बहादुरी और साहसिक पहल के लिए उसे देश के प्रधानमन्त्री जी ने वर्ष 2003 का राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान किया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

विस्मयकारी भारत

सन 2008 में दिल्ली में कोहिनूर फूड्स लिमिटेड ने 12000 किग्रा. चावल और सब्ज़ियों की मदद से 60 शेफ़ द्वारा की गई मेहनत के साथ विश्व की सबसे बड़ी बिरयानी बनाकर, गिनेस बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में नाम दर्ज करा लिया।

कांगड़ा (हि.प्र.) के ज्वाला देवी मंदिर में पिछले सैकड़ों सालों से प्राकृतिक रूप से जलती हुई ज्वाला पूजी जा रही है परन्तु इसके पीछे के वैज्ञानिक कारण का कोई निश्चित आधार अभी भी नहीं मिल सका है।

गढ़चिरौली (महाराष्ट्र) के हेमलकसा जंगलों के बीच कई एकड़ में बसा है एक अनाथालय, जहां रेमन मैग्सेसे व पद्मश्री जैसे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित डॉ. प्रकाश और मंदाकिनी आम्टे 100 के लगभग जंगली जीवों के अनाथ बच्चों के साथ बसे हुए हैं। इसे एनिमल आर्क का नाम दिया गया है और यहां तेंदुए, लकड़बग्घे, सियार, काले हिरण, मगरमच्छ व सांप जैसे जीव एक परिवार के सदस्यों की तरह साथ-साथ रहते हैं।

रवि लायटू
बरेली (उत्तर प्रदेश)

अपने देश में ठगी का पर्याय बन जाने वाला यह शक़्स है नटवर लाल (वास्तविक नाम: मिथिलेश कुमार श्रीवास्तव) जो बिहार के सीवान जिले के बंगरा गांव में पैदा हुआ।

ठगी के मानदंड स्थापित करने वाले इस व्यक्ति ने न केवल छोटी से लेकर बड़ी-बड़ी जालसाज़ियां की वरन सरकारी उच्च अधिकारी बनकर ताज महल को तीन बार, लाल किले को दो बार और राष्ट्रपति भवन व संसद भवन को एक-एक बार विदेशियों के हाथों बेच डालने का असंभव कार्य भी संभव कर डाला।

इसके अपराधों की लिस्ट बहुत लंबी है जिसके चलते इसे आठ बार गिरफ़्तार किया गया पर हर बार यह किसी न किसी तरह झांसा देकर भाग निकले में सफल रहा।

बहादुर मुस्कान

संध्या का समय था। मुस्कान आँगन के चबूतरे पर बैठी मोबाइल की मदद से अपना होमवर्क पूरा करने में लगी थी कि तभी बाड़ी के रास्ते से एक बड़ा सा सियार आँगन में घुस आया। वह मुर्गे–मुर्गियों की तलाश में अन्दर आया था। अचानक सामने एक बड़ा सा सियार देख मुस्कान घबरा कर चीख पड़ी– "माँ. अ..अ...!" आज तक केवल किताबों में, मोबाइल– टी.वी. के स्क्रीन पर ही उसने जंगली जानवरों, मसलन–सियार, हुंडार, शेर, चीता और भालू–बन्दर को देखा था।

आज साक्षात् एक सियार को सामने पाकर पहले तो वह डर गई पर डर कर वह भागी नहीं। डर के आगे जीत है, इस विज्ञापन को उसने टीवी पर बहुत बार देखा था। अपने बाबा के मुख से सुनी मुटरा की कहानी भी उसे याद थी। मुटरा बचपन से ही बड़ा बहादुर और निडर बालक था। बाबा से सुना था मुटरा बचपन में धामन साँप की पूँछ पकड़ खूब घुमाता और सियार–सूअरों को वह दौड़ाया करता था।

आँगन में आकर सियार मुँह उठाए इधर–उधर ताकते फिर रहा था। मौका गँवाए बिना मुस्कान ने मोबाइल को धीरे से चबूतरे पर रखा और बगल में पड़े एक डंडे को उठा लिया। फिर उस डंडे को लिये वह अचानक से सियार की ओर दौड़ पड़ी– "ले मुर्गी–खा डंडा!" अकस्मात हमले से सियार घबरा कर इधर से उधर भागने लगा और पीछे से डंडा लेकर मुस्कान उसे दौड़ाने लगी, उत्साह में वह यह भूल गयी थी कि सियार उसे पलट कर काट सकता है, नोच भी सकता है। उसे तो बस मुटरा याद था, उसकी बहादुरी याद थी। डर के आगे जीत है, वह विज्ञापन याद था।

उस समय मुस्कान की माँ सुबह के लिए बाड़ी में साग तोड़ रही थी। उसने मुस्कान की चीख सुन ली थी सो जल्दी–जल्दी साग तोड़ बाड़ी तरफ का दरवाजा बन्द कर घर आ गई। जैसे ही उसने

आँगन में कदम रखा, डंडा लेकर सियार के पीछे दौड़ती–भागती मुस्कान को देख वह दंग रह गयी– "अरे, मुस्कान रुको!" उसे लगा सियार कहीं उसे काट न दे। एक छिपकली देख डरने वाली लड़की में इतनी हिम्मत कहाँ से आ गई! माँ चकित थी! उधर सियार को दौड़ा–दौड़ा कर उसने परेशान कर दिया। "मुस्कान, बस रुको और नहीं।" माँ ने फिर आवाज दी।

मुस्कान रुक गई! उसका दौड़ना रुक गया। उसका जुनून रुक गया। सियार भागकर नाली में जा छिपा। मुस्कान ने माँ की ओर देखा। उसी वक्त मैं काम से लौटा था। आँगन में कदम रखा तो नजारा कुछ और था। चारों तरफ सब कुछ बिखरा–बिखरा। मैंने समझा किसी ने किसी कुत्ते को आँगन में खूब दौड़ाया। दोनों माँ बेटी उसी को घूर–घूरकर देख रही हैं लेकिन तभी मुस्कान के हाथ में डंडा देखकर मैं चौंका! आखिर माजरा क्या है? मुस्कान डंडा क्यों पकड़े हुए है?

"यह सब क्या है मुस्कान ?" मेरा सवाल उसी से था। जवाब उसकी माँ ने दिया– "मैं बाड़ी में साग तोड़ रही थी और मुस्कान यहाँ आँगन के चबूतरे पर बैठी अपना होमवर्क पूरा कर रही थी तभी बाड़ी की तरफ से एक सियार आँगन में घुस आया था।'' "क्या? सियार आँगन में घुस आया था और मुस्कान आँगन में अकेली थी? मैं तो समझा किसी कुत्ते ने यह सब किया है।"

अकस्मात मुझे दो माह पहले की एक मासूम पर बीती मार्मिक घटना की याद आ गई। एक दोस्त ने वाट्सएप किया था। पढ़कर कई बार मुझे रोना आ गया था। बेटियाँ कहीं भी, किसी भी उम्र में सुरक्षित नहीं है। पेट से बचकर निकली तो बाहर जंगली जानवरों का खतरा, बड़ी हुई तो शहरी जानवरों का खतरा। लिखा था कि छः माह की मासूम मनीषा घर के आँगन में खाट पर सोई थी। पिता राजमिस्त्री के काम पर गया था और माँ गायों को गोहाल में पुयाल देने गई थी। इसी बीच बच्ची अचानक जोर से रोई तो माँ दौड़ी आई। देखकर उसके होश उड़ गए। पीछे के बाहरी दरवाजे से आँगन में घुसा एक सियार बच्ची का सिर अपने मुँह में दबाए आँगन में खड़ा था।

बच्ची की माँ ने एक लाठी उठाई और सियार की ओर मारी। सियार बच्ची को मुँह में दबाए आँगन में दौड़ता रहा। मासूम चिल्लाती रही और माँ का कलेजा फटता रहा। इसी बीच सियार बच्ची को लेकर दरवाजे से बाहर निकल गया। माँ पीछे–पीछे चिल्लाती हुई भागी।

तभी पड़ोस की एक और महिला लाठी–पत्थर लेकर आई। घर के पास ही दोनों महिलाओं ने मिलकर सियार को घेरा तो सियार वापस आँगन की ओर भागा। तब भी मासूम बच्ची सियार के जबड़े में दबी थी। झपटा मारकर बच्ची की माँ सियार पर कूद पड़ी और सियार के पिछले दोनों पैर पकड़ कर उसको टाँग दिया और धूनने लगी, तब कहीं जाकर बच्ची सियार के मुँह से छूटी। बच्ची को तुरन्त अस्पताल ले जाया गया। सिर और आँख में गहरे घाव हो गये थे।

मैं आगे बढ़कर मुस्कान के हाथ–पैर देखने लगा– "कहीं तुम्हें तो चोट नहीं आई?" "अच्छा! फिर क्या हुआ?" मैंने ही पूछा। "मुस्कान उसे दौड़ा–दौड़ा कर समूचे आँगन की यह हालत कर दी।" उसकी माँ बोली। "अरे वाह ब्रेव! छिपकली देख चीखने वाली हमारी मुस्कान शेरनी बन गई। यह हिम्मत कहाँ से आई मुस्कान।"

"मुटरा से।" मुस्कराते हुए मुस्कान ने कहा। "अच्छा और सियार अभी कहाँ है?" "शायद नाली में जा छिपा है।" उसकी माँ बोली। "जाकर गली का दरवाजा खोल दो, सियार को मैं उधर से दौड़ाता हूँ।" "बाबा, डंडा ले लो।" उसने वही डंडा अब मुझे पकड़ा दिया। नाली से निकल कर गली में आते ही सियार अंधाधुंध दौड़ पड़ा। उसके पीछे बच्चे चिल्लाये– "सियार रे.. सियार.रे.। पीछे से मुस्कान ने आवाज लगाई– "हुर्रे–हुर्रे...!" अब सियार के पीछे कुत्ते दौड़ रहे थे।

श्यामल बिहारी महतो
बोकारो (झारखंड)

वर्ग पहेली

– राधा पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

बाएँ से दाएँ

1. 90 डिग्री का कोण (4)
4. भारत का राष्ट्रीय ध्वज (3)
7. महीना, मास (2)
8. काष्ठ, काठ (3)
9. पान, पर्ण (2)
10. एक ज्ञानेन्द्रिय (2)
11. सूर्य, अंधा (2)
12. बगीचा, उपवन (3)
14. लक्ष्मी (1)
15. नुकसान से होनी वाली उदासीनता, डिप्रेशन (4)
17. तुल्यता, समानता (3)
19. नस, नाड़ी (3)
20. एक जगह इकट्ठा किया हुआ, संगृहीत (4)
21. दाड़म, एक बहुबीजीय फल (3)
22. समान, दो से भाजित पूर्ण संख्या (2)

ऊपर से नीचे

1. खत्म होना, समाप्ति (4)
2. महिमा, बड़प्पन (3)
3. जैन धर्म का मुख्य मंत्र (4)
4. इससे रेवड़ी व मिठाई बनती हैं (2)
5. गरीब, निर्धन (2)
6. बैलगाड़ी चलाने वाला (4)
10. एक चौपहिया वाहन (2)
11. सूरदास के कीर्तनों, पदों का संकलन (5)
13. राज्यपाल/राष्ट्रपति के लिए प्रयुक्त सम्मान सूचक शब्द (5)
16. नहीं तो, कन्या द्वारा वर को स्वीकारना (3)
17. संक्षेप, दो शब्दों को मिलाकर एक करना (3)
18. पिता, बाप, जनक (2)

उत्तर इसी अंक में

कबीर वाणी...

हमेशा दूसरों की बुराइयाँ करने वाले लोगों अर्थात् निन्दक को हमेशा अपने पास में रखना चाहिए, क्यूँकि ऐसे लोग अगर आपके पास रहेंगे तो आपकी बुराइयाँ आपको बताते रहेंगे और आप आसानी से अपनी गलतियाँ सुधार सकते हैं। निन्दक लोग बिना पानी व साबुन के इनसान के स्वभाव को दोष रहित बना देते हैं।

निंदक नियरे राखिये, आँगन कुटी छवायें,
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुहाए।

कितना अच्छा नीम

देखभाल करता है सबकी,
बनकर एक हकीम।
हँसता-गाता, मन बहलाता,
कितना अच्छा नीम।।

छाया देता, लकड़ी देता,
देता है दातून।
दादा-दादी इसके नीचे,
पातें बहुत सुकून।।

दौड़ लगाती हैं गिलहरियाँ,
रोज सवेरे-शाम।
थके हुए पंछी डालों पर,
करते हैं आराम।।

ठंडी, गर्मी, बारिश सबका,
सहता है आघात।
धैर्य नहीं खोता है फिर भी,
अड़कर देता मात।।

पेड़ों से ही इस दुनिया में,
जन-जीवन आबाद।
चलो बढ़ाएँ हम सब मिलकर,
पेड़ों की तादाद।।

योगेन्द्र प्रताप मौर्य
जौनपुर (उत्तर प्रदेश)

बातूनी खीरा

अनीता गंगाधर शर्मा
अजमेर (राजस्थान)

हरी बेल पर लटके खीरे,
आपस में बतियाये।
रोग मिटे उस जन के सारे,
रोज हमें जो खाये।

कई विटामिन अन्दर मेरे,
फाइबर है भरपूर।
मुख पर उसके रहे न रौनक,
रहे जो हमसे दूर।

नैनो को हम दें शीतलता,
तन को राहत देते।
सेहतमन्द उसे हम रखते,
जो भोजन में लेते।

कील मुहाँसे धब्बों को हम,
मुख से दूर भगाते।
बच्चे बूढ़े नौजवान सब,
बड़े मजे से खाते।

नाटिका

हँसगुल्ले का स्वाद

पात्र– विनय, हर्ष, मुस्कान और प्राची, सभी किशोर।

(छुट्टी का दिन है। सब प्रसन्न मुद्रा में कुर्सियों पर आसीन हैं। मंच के चारों ओर रंग बिरंगे सुन्दर कृत्रिम फूलों की साज सज्जा तथा गुब्बारे दूर से दिख रहे हैं)

हर्ष : विनय! तुम इन फूलों को निहारते हुए तथा मन्द–मन्द मुस्कुराते हुए क्या सोच रहे हो?

विनय : वाह! तुमने कैसे जान लिया कि मैं कुछ सोच–विचार रहा हूँ?

हर्ष : खग जाने खग की ही भाषा।

मुस्कान : कितना ठीक और सटीक जवाब, हर्ष तुमने दे दिया। विनय! अब तो अपने विचारों की कुछ जानकारी हम लोगों को भी दे सकते हो।

विनय : लेकिन बहन प्राची अपने मुँह में अभी तक दही क्यों जमाए है?

प्राची : बस यही मुहावरा सुनने के लिए।

विनय : तुम सभी इन फलों को देखकर हँस रहे हो, लेकिन मैं इन फूलों पर हँस रहा हूँ। ये कितने दिखाऊँ और रिझाऊ हैं, पर टिकाऊ नहीं हैं। बिलकुल असली दिखकर भी बिलकुल नकली हैं।

हर्ष : लेकिन हैं तो बहुत ही सुन्दर भले ही इनके अन्दर सुगंध नहीं है।

विनय : फिर भी ऐसा सरासर बनावटी रूप मुझे पसन्द नहीं है।

मुस्कान : हाँ! ऐसा मैं भी मानती हूँ कि नकली चीज से असली खुशी सपना है।

प्राची : लेकिन समय के अनुसार रुचियाँ बदलती हैं। आजकल के चलन को नकारना अपनी गाड़ी को पटरी के नीचे उतारना है। धारा के अनुसार बहना जरूरी हैं।

विनय : मैं कुछ सवाल पूछना चाहता हूँ। क्या हम जबरन खाते हैं? क्या हम जबरन पानी पीते हैं? क्या कागज पर बनी

रोटियों से भूख बुझ सकती है? क्या पानी की फोटो देखने से प्यास बुझ सकती है? मतलब यह कि क्या हँसना हमारा स्वभाव नहीं होना चाहिए? क्या हँसने से बढ़कर हँसने का अभिनय है।

विनय : मेरे दादाजी कहते हैं कि हँसी कभी बूढ़ी नहीं होती, इसलिए हँसने वाला कभी बूढ़ा नहीं होता। असली मुख से असली हँसी शोभा देती है। जिसके घर में मोर है, वह मोरपंख लिए नहीं घूमता है। जिसके घर में फूलों की बगिया है वह इत्र नहीं लगाता है।

मुस्कान : मेरा भी कहना है कि जिसके पास स्वयं हँसी का खजाना है, उसे हँसी ढूँढ़ने कहीं नहीं जाना है। आजकल ढेरों सुख–सुविधाएँ रहने के बावजूद भी अन्दर से खुशियों से लबालब न होना मतलब नदी किनारे घोंघे का प्यासा रहना है। पहले स्वयं खुश रहना है, फिर खुश करना है।

हर्ष : ये सब सुनकर और समझकर मेरा मन मुड़ रहा है, यानी दिली हँसी से ज्यादा जुड़ रहा है, किन्तु एक चीज विनय की तरह मेरे दिमाग में आई है कि टेंशन के जमाने में तो यह सच्ची हँसी, गरमी में हरियाली की तरह सिमटती जा रही है। दिखावे का ही चलन अधिक है।

विनय : भाई! जैसे हंस पानी मिले दूध से केवल दूध ही ग्रहण करता है। हमें भी प्रतिकूल परिस्थिति में अपने मन के अनुकूल रहना है। प्रयास से क्या नहीं मिलता? यदि सोच सकारात्मक हो। हमारी बुद्धि में शुद्धि रहेगी तो जैसे लोग केवल फोटो उतरवाते समय हँसमुख दिखते हैं, हम वैसे न रहकर हमेशा हँसमुख दिखेंगे।

प्राची : एक समस्या हम सबके साथ परछाई की तरह बनी रहती है। यह कि दिन भर पढ़ाई फिर कोचिंग और फिर होमवर्क में जितने व्यस्त उतने त्रस्त। क्या मशीन होकर हम खुलकर हँस सकते हैं? इन सब परिस्थितियों के बाद भी विनय भाई का यह कहना ठीक लगता है कि हमें सोच में सकारात्मक होना चाहिए। काँटों जैसी दशा में भी गुलाब जैसी हँसी रखना चाहिए। मुस्कान की भी यह बात बढ़िया है।

मुस्कान : (खूब हँसती और ताली बजाती हुई) अरे वाह! मुझे तो पता ही नहीं है कि क्या बढ़िया कह दिया।

प्राची : लो, मैं दोहराए देती हूँ– ''आजकल ढेरों सुख–सुविधाएँ रहने के बाद भी अन्दर से खुशियों से लबालब न होना, मतलब नदी किनारे घोंघे का प्यासा रहना है। विनय का यह कहना अब समझ में आने लगा है कि कमल कीचड़ से ही उत्पन्न होकर मुस्कुराने के बाद खूब खिलखिलाता है। हँसना हर इनसान का हुनर होना चाहिए।

विनय : लेकिन हर्ष भैया की धारा अभी ज्यादा नहीं बढ़ पाई जबकि यथा नाम तथा काम के हिसाब से उसे हर्ष अर्थात् प्रसन्नता के विषय में लाउड स्पीकर होना चाहिए।

हर्ष : मैं भी अब बहुत सोच समझकर इस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि जो खुश नहीं है, वह कुछ भी नहीं है। हँसी का स्विच खुशी के पास रहता है। हास्यप्रिय व्यक्ति ही सफल व मिलनसार होता है। सबका भला सोचने वाला सूरजमुखी की तरह हँसमुख रहता है। हमें यदि इस किशोर अवस्था में भरपूर हँसना नहीं आया तो क्या बुढ़ापे में आएगा ?

मुस्कान : मैंने भी ये पढ़ा है कि लाफिंग इज ए गुड एक्सरसाइज और मैंने तो यह सुना है– "भले कोई मजबूरी है। हँसना बहुत

जरूरी है। दूर से मैंने भी देखा है कि एक पहाड़ी झरना खूब ऊपर से खूब नीचे पछाड़ खाकर गिरकर भी जोरदार ठहाके लगाता है। जी भरकर हँसने वाला आँसू नहीं बहाता है।

विनय : सभी रसों में आज हास्यरस का स्थान बैटरी चार्जर के समान है। वह बीमार के लिए अनार है। खुशियों को साझा करने से टेंशन ऐसे फुर्र हो जाता है, जैसे आँधी के सामने भूसा उड़ जाता है। हँसने का भाव हमारे स्वभाव में होना ही चाहिए।

हर्ष : मुझे विनय की तरह अपने गुरुजी की यह बात अचानक याद आई कि जैसे जड़ों के बिना झाड़ नहीं। पत्थरों के बिना पहाड़ नहीं। जैसे ही प्रफुल्लता के बिना हँसी का जुगाड़ नहीं। अब तो मैं भी पूरा सहमत हूँ कि रसगुल्ले का स्वाद थोड़ी ही देर तक रहता है, लेकिन हँसगुल्ले का स्वाद बना ही रहता है।

प्राची : हँसते हुए नमस्ते करने के कायदे के ढेर सारे फायदे हैं। इसलिए हँसमुखता को प्रमुखता देनी चाहिए। सरल और निर्मल स्वभाव का आदमी ही पुष्प की पंखुरियों की तरह खुलकर हँसता है। विनय जैसा, सबका मन होना अति आवश्यक है। 'हास्यमेव जयते'। हँसता चेहरा ही सुन्दर दिखता है।

मुस्कान : परेशानियाँ जाओ भूल।

विनय : ऐसा बोलो बरसें फूल।।

(समवेत स्वर में करतल ध्वनि के साथ)

आओ हँसे हम और खिलखिलाएँ।
इसी तरह रोज तालियाँ बजाएँ।।

राजा चौरसिया
उमरियापान कटनी (मध्य प्रदेश)

प्रवीन कुमार, रेवाड़ी (हरियाणा)

उत्तर इसी अंक में

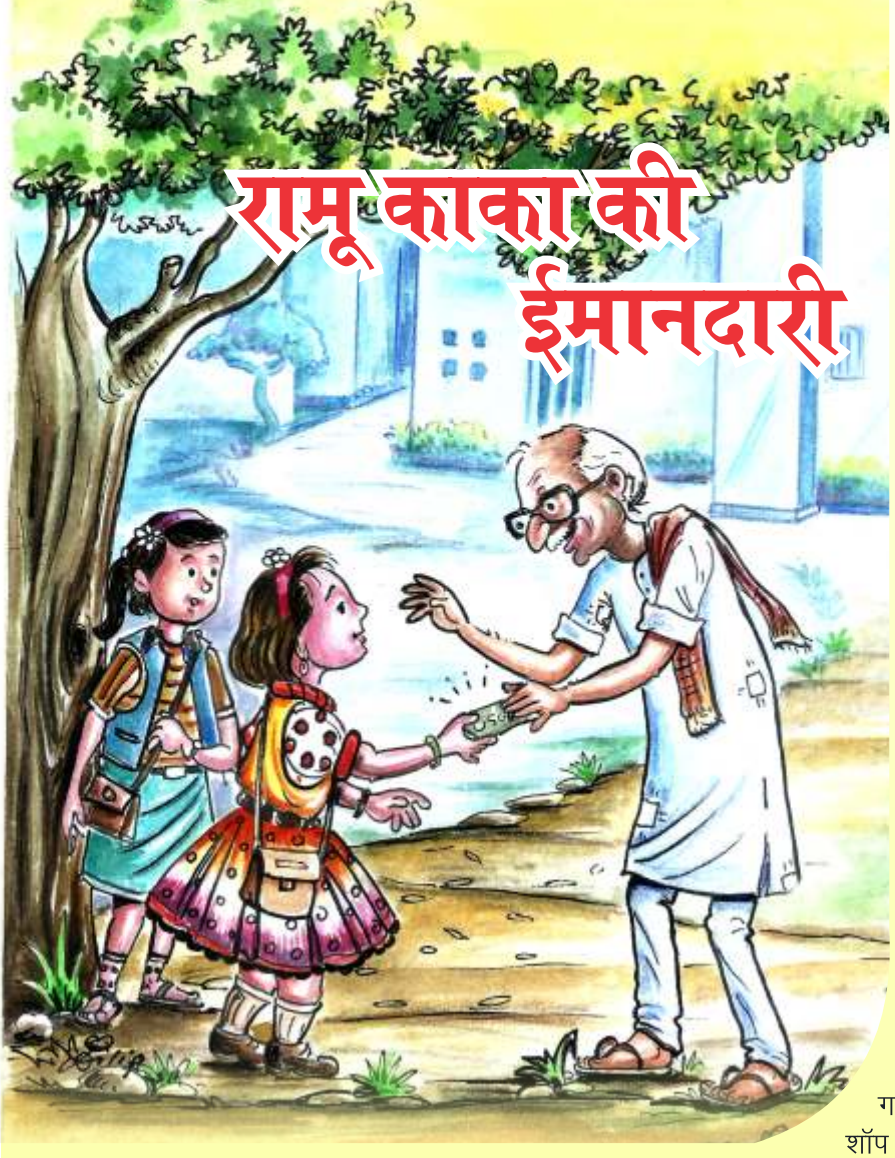

रामू काका की ईमानदारी

मिनी रोज की तरह आज भी स्कूल से आकर खाना खाकर सो गई थी पर मम्मी ने उसे जल्दी ही जगा दिया। मिनी आँखें मलती हुई उठी और बोली– "मम्मी थोड़ी देर और सोने दो ना... आज स्कूल में हमने खूब खेल खेले। मुझे बहुत नींद आ रही है।" मम्मी ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा– "आज तुम्हारी बेस्ट फ्रेंड वंशिका का जन्मदिन है। तुम स्कूल चली गई थी तब उसकी मम्मी आई थीं। शाम को पाँच बजे तुम्हें वंशिका की बर्थडे पार्टी में जाना है।"

बर्थडे पार्टी की बात सुनकर मिनी की बाँछें खिल उठी। वह झटपट उठी और बोली– "ठीक है मम्मी। मैं फटाफट अपना होमवर्क कर लेती हूँ और फिर मैं बर्थडे पार्टी के लिए तैयार हो जाऊँगी।" मिनी ने जल्दी ही अपना होमवर्क कर लिया और अपनी पसन्दीदा फ्रॉक पहन कर पार्टी में जाने के लिए तैयार हो गई । मम्मी ने मिनी को पाँच सौ रुपए देते हुए कहा– "पास वाली स्टेशनरी शॉप से छह नोटबुक्स का सेट खरीदकर उसे गिफ्ट पैक करवा लेना और वंशिका को दे देना।"

मिनी ने फटाफट नोट लेकर फ्रॉक के साथ लगे छोटे पर्स में रख लिया था। बाहर निकलकर उसने देखा कि रामू काका उनके लॉन में पेड़–पौधों की छँटाई कर रहे थे। मिनी उन्हें प्रणाम कर आगे बढ़ गई थी। मिनी जब स्टेशनरी शॉप पर पहुँची तो उसने छह नोटबुक्स का सेट पैक करवा लिया। अंकल को रुपए देने के लिए उसने जैसे ही पर्स में हाथ डाला तो देखा पर्स की सिलाई उधड़ी हुई थी। उसे नोट नहीं मिला।

उसने नोट यहाँ वहाँ ढूँढ़ा पर उसे नोट नहीं मिला। वह उदास होकर वहीं नीम के पेड़ के नीचे बैठ गई। वह यही सोच रही थी कि मम्मी से अकसर वह यही कहती है कि वह बड़ी हो गई है। उसे थोड़ी जिम्मेदारी मिलनी ही चाहिए। आज जब मम्मी ने जिम्मेदारी दी तो वह कहाँ पूरी कर पाई। उसे मम्मी की डाँट का भी बहुत डर लग रहा था। तभी उसकी सहेली श्रुति ने उसे झकझोरा।

देखें पृष्ठ 25...

आओ, मनाएँ हिन्दी दिवस

सलोनी आज स्कूल से आयी तो उसके हाथ में फूलों का एक छोटा–सा खूबसूरत गुलदस्ता और प्रमाण पत्र देखकर उसकी मम्मी वनिता खुश होते हुए बोली– "यह क्या है सल्लू, आज स्कूल में कोई प्रतियोगिता थी क्या?" "हाँ मम्मी! आज मेरी कक्षा में हिन्दी टीचर ने अपनी कक्षा में 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य में एक प्रतियोगिता आयोजित की थी जिसमें सभी बच्चों को किसी भी विषय पर दस वाक्य शुद्ध हिन्दी में लिखने के लिए कहा था। मेरे लिखे हुए सभी वाक्य शुद्ध थे और मुझे प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला है।" खुशी से उछलते हुए सलोनी ने कहा।

"वाह! सल्लू बेटा..कांग्रेच्युलेशन्स।" वनिता ने सलोनी की पीठ थपथपाते हुए कहा। "कांग्रेच्युलेशन्स नहीं मम्मी, बधाई कहो। टीचर ने कहा है कि हमें शुद्ध हिन्दी में बोलने का प्रयत्न करना चाहिए और अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग टालना चाहिए।" सलोनी ने मुस्कुराते हुए कहा तो वनिता खिलखिलाकर हँसने लगी। "हाँ हाँ बेटा! बिलकुल सही बात कही है तुम्हारी शिक्षिका ने। हमें शुद्ध हिन्दी में ही बात करनी चाहिए। आज 'हिन्दी दिवस' है ना। चलो मैं आज से ही शुद्ध हिन्दी में बोलने की कोशिश करूँगी।" वनिता ने सलोनी की बात का समर्थन करते हुए कहा।

"मम्मी! ये 'हिन्दी दिवस' क्यों मनाया जाता है, 'राष्ट्रभाषा' और 'राजभाषा' में क्या अन्तर है। ये सब मुझे बताओ ना। कक्षा में भी बताया था पर कक्षा में शोरगुल अधिक हो रहा था इसलिए मेरी समझ में कुछ नहीं आया।" कहते हुए सलोनी अपने कमरे की ओर बढ़ने लगी। "बेटा! अभी तुम हाथ–मुँह धोकर कुछ खा लो। तुम्हें भूख लगी होगी। मैंने तुम्हारे लिए आलू के परांठे बनाएँ है। तुम्हारे पापा बैंक में हिन्दी अधिकारी है। शाम को उनसे पूछ लेना। वे तुम्हें 'हिन्दी दिवस' के बारे में पूरी जानकारी दे देंगे।" वनिता ने रसोई की ओर मुड़ते हुए कहा तो सलोनी खुशी से चिल्लाते हुए बोली। "वाह! आलू के गरमा–गरम परांठे। मेरे मुँह में तो अभी से पानी आने लगा है। मैं अभी हाथ मुँह धोकर आती हूँ मम्मी।"

सलोनी जल्दी से डायनिंग टेबल पर बैठ गई, उसके पेट में तो चूहे कूद रहे थे। उसने मम्मी को आवाज देने के लिए मुँह खोला ही था कि वनिता प्लेट में आलू का गरमा गरम एक परांठा लेकर आ गई और उसके सामने रखते हुए कहा– "ये लो खाना शुरू करो तब तक मैं दूसरा परांठा बना देती हूँ।" "ठीक है! यह तो अभी पलभर में गायब हो जाएगा।" कहते हुए सलोनी परांठे पर टूट पड़ी। सलोनी ने कुछ ही देर में दो परांठे चट कर लिए फिर लम्बी डकार लेते हुए अपने कमरे में होमवर्क करने बैठ

गई। यह सलोनी का नित्यकर्म था। वह बार–बार घड़ी की तरफ देख रही थी क्योंकि उसके पापा हमेशा 5:30 बजे आ जाते है। अब तो घड़ी में साढ़े छः बज रहे थे लेकिन उसके पापा नहीं आए तो उसने अपने कमरे से ही मम्मी को आवाज दी– "मम्मी! आज पापा देरी से आने वाले है क्या?" "अरे हाँ बेटा! मैं तुम्हें बताना ही भूल गई, वे सुबह ही कहकर गए थे कि उनकी शाखा में आज 'हिन्दी दिवस' मनाया जाएगा इसलिए वे देरी से आएँगे।"

"ठीक है मम्मी..मैं अपना होमवर्क पूरा कर लेती हूँ।" थोड़ी ही देर बाद बेल बजती है। सलोनी दौड़कर दरवाजा खोलती है। अपने पापा के हाथ में भी फूलों का सुन्दर गुलदस्ता देखकर वह खुश हो जाती है और लपक कर उनके हाथ से गुलदस्ता ले लेती है। "पापा! आपकी बैंक में भी आज 'हिन्दी दिवस' मनाया गया क्या?" "हाँ बेटा! आज 14 सितम्बर है ना, इसलिए सभी सरकारी बैंकों और कार्यालयों में 'हिन्दी दिवस' मनाया जाता है।" "यह क्यों मनाया जाता है? 'राष्ट्रभाषा' और 'राजभाषा' क्या होती है, ये 14 सितम्बर को ही क्यों मनाया जाता है?" सलोनी ने सवालों के बाण छोड़ना शुरू कर दिया।

"अरे भई! मुझे अन्दर तो आने दो फिर तुम्हें 'हिन्दी दिवस' के बारे में सब कुछ बताऊँगा। पहले मैं हाथ–मुँह धोकर तुम्हारी मम्मी के हाथ की चाय तो पी लूँ।" सलोनी को प्यार करते हुए आलोक ने कहा। कुछ ही समय में आलोक बाहर हॉल में आ जाते हैं, वनिता अपने और आलोक के लिए चाय लेकर आ जाती है।

आलोक ने सलोनी को अपने समीप बैठाते हुए कहा– "सल्लू बेटा! सबसे पहले तो यह समझो कि प्रत्येक देश की अपनी–अपनी एक भाषा होती है जिसे हम 'राष्ट्रभाषा' कहते हैं। जिस भाषा को उस देश के अधिकांश लोग आसानी से समझ सकते हैं, बोल सकते हैं और लिख सकते हैं, उसी भाषा को 'राष्ट्रभाषा' का दर्जा दिया जाता है। भारत देश में हिन्दी भाषा को अब तक 'राष्ट्रभाषा' का दर्जा प्राप्त नहीं है मगर हिन्दी ही देश की एकमात्र ऐसी भाषा है जिसे देश की अधिकांश जनसंख्या समझ, बोल और लिख सकती है।"

"लेकिन पापा, यह सब कौन तय करता है?" सलोनी बीच में बोल पड़ी। "बहुत अच्छा सवाल किया है तुमने बेटा। यह संविधान से तय होता है। संविधान हमारे देश का सर्वोच्च कानून होता है। भारत की संविधान सभा में 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को 'राजभाषा' का दर्जा मिला था। संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी गई हिन्दी भाषा को भारत गणराज्य की 'राजभाषा' के रूप में घोषित किया था, तब से हिन्दी हमारी राजभाषा बन गई है इसीलिए इस दिन को हम 'हिन्दी दिवस' के रूप में प्रतिवर्ष मनाते हैं।"

"पापा, 'हिन्दी दिवस' प्रतिवर्ष क्यों मनाया जाता है?" सलोनी ने पूछा। "देश में हिन्दी का प्रचार और प्रसार हो इसके लिए 'हिन्दी दिवस' मनाया जाता है। खासकर सभी सरकारी बैंकों और कार्यालयों में 'हिन्दी दिवस' बड़े पैमाने पर मनाया जाता है ताकि कर्मचारी हिन्दी में अधिक से अधिक काम करने के लिए प्रेरित हों। सरकारी बैंकों और कार्यालयों में हिन्दी में ज्यादा कार्य होगा तो आम आदमी को बहुत सुविधा होगी। सल्लू जिस तरह हम 'शिक्षक दिवस', 'बाल दिवस', 'खेल दिवस', 'योग दिवस' आदि मनाते हैं उसी तरह 'हिन्दी दिवस' भी प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को मनाया जाता है।" चाय का अन्तिम घूँट लेते हुए आलोक ने अपनी बात समाप्त की।

"सल्लू हिन्दी भाषा के बारे में और कोई सवाल हैं?" मुस्कुराते हुए आलोक ने पूछा। "हाँ! पापा बस एक और सवाल है मुझे यह बताओ कि 'राष्ट्रभाषा' और 'राजभाषा' में क्या अन्तर है? "वाह! बेटा मैं तुमसे इसी सवाल की प्रतीक्षा कर रहा था। राष्ट्र के अधिकांश लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा को 'राष्ट्रभाषा' कहा जाता है परन्तु भारतीय संविधान में किसी भी भाषा को 'राष्ट्रभाषा' का दर्जा नहीं मिला हुआ है।

हिन्दी को 'राष्ट्रभाषा' का दर्जा देने के लिए वर्ष 1918 में महात्मा गाँधी ने हिन्दी साहित्य

सम्मेलन में हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने की बात कही थी, पंडित जवाहरलाल नेहरू भी इसके पक्ष में थे मगर संविधान सभा में लम्बी बहस और कई चर्चा सत्रों के बावजूद हिन्दी को राष्ट्र भाषा का दर्जा प्राप्त नहीं हो सका। भारतीय संविधान में जिन भाषाओं को आधिकारिक दर्जा मिला हुआ है उनमें अँग्रेजी और हिन्दी भी शामिल है। भारतीय संविधान की धारा 343 के अन्तर्गत हिन्दी को देश की 'राजभाषा' का दर्जा दिया गया है जिसे हम सरकारी कामकाज की भाषा भी कह सकते हैं।''

आलोक ने देखा कि सलोनी बहुत ही ध्यान से सारी बातें सुन रही है। इसी मौके का फायदा उठाकर आलोक ने हिन्दी के बारे में कुछ और बातें बताना शुरू कर दिया। "सल्लू बेटा! अपने देश की भाषा में बोलने से हमें गर्व और मानसिक सन्तोष का अनुभव होता है। देश में राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने के लिए भी राष्ट्रभाषा की आवश्यकता होती है। तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि हिन्दी पूरे विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में तीसरे स्थान पर है। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है।"

अल्प विराम के बाद आलोक ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा– "एक बात और तुम्हें बताना चाहूँगा, जिसके कारण हर भारतीय का सिर गर्व से ऊँचा उठ गया है। पिछले दिनों यूएन अर्थात् संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा ने पहली बार हिन्दी भाषा से जुड़े भारत के प्रस्ताव को मंजूरी दी है। अब संयुक्त राष्ट्र (यूएन) सभी आवश्यक कामकाजी सूचनाओं और संदेशों को आधिकारिक भाषाओं के अलावा हिन्दी में भी जारी करेगा।" "वाह! यह तो बहुत ही खुशी और गर्व की बात है।" सलोनी ने खुशी से उछलते हुए कहा। "हाँ! निःसंदेह यह हर भारतीय के लिए गौरव और अभिमान की बात है।" आलोक और वनिता ने एक स्वर में कहा।

ताराचंद मकसाने
नवी मुंबई (महाराष्ट्र)

'रामू काका की ईमानदारी' पृष्ठ 22 का शेष

श्रुति उनकी कॉलोनी में ही रहती थी। श्रुति ने मिनी से पूछा– "वंशिका की बर्थडे पार्टी में नहीं चलना क्या?"

मिनी ने उदास होते हुए कहा– "बर्थडे पार्टी के लिए ही तो निकली थी तैयार होकर। मम्मी ने 500 रुपए देते हुए कहा था कि स्टेशनरी वाले अंकल से नोटबुक्स का सेट गिफ्ट पैक करवाकर वंशिका को देना है लेकिन अंकल से नोटबुक्स लेने के बाद मैंने जेब में हाथ डाला तो देखा पाँच सौ का नोट गायब था। मैं 8–10 चक्कर लगाकर ढूँढ चुकी हूँ। मैं समझ नहीं पा रही हूँ कि इतनी सी दूरी में नोट कहाँ गिर गया? मुझे तो कोई इधर आता–जाता भी नहीं दिखा।"

श्रुति ने वंशिका की हिम्मत बढ़ाते हुए कहा– "नोट मिल जाएगा। हम फिर से कोशिश करते हैं।" दोनों सहेलियाँ फिर से नोट ढूँढने की कोशिश करने लगीं पर नोट कहीं नहीं मिला। तभी सामने से रामू काका आते हुए नजर आए। मिनी ने श्रुति से कहा– "जब मैं घर से निकली थी। तब रामू काका हमारे घर में पेड़ों की छँटाई कर रहे थे। दोनों बच्चों ने देखा कि रामू काका उनके बिलकुल नजदीक आ गए थे। मिनी की ओर पाँच सौ का नोट बढ़ाते हुए वे बोले– "यह नोट वहीं घर के बाहर गिरा हुआ मिला। जब मैं पत्ते समेटने लगा तब मेरी इस नोट पर नजर पड़ी। तुम दोनों को यहाँ–वहाँ कुछ ढूँढते देखकर मैं समझ गया कि यह नोट तुम्हारा ही है। लो सँभालो इसे।"

नोट को देखकर मिनी की जान में जान आ गई। उसने रामू काका को धन्यवाद दिया और उनके पाँव भी छुए। काका ने उसे ढेरों आशीर्वाद दिए और यही कहा– "बच्चो! गरीबी में भी ईमानदार बने रहने से मन को सुकून मिलता है।" अब मिनी ने अपना गिफ्ट पैक करा लिया था। दोनों सहेलियाँ खुशी–खुशी वंशिका की बर्थडे पार्टी के लिए उसके घर की ओर बढ़ गई।

डॉ. अलका जैन आराधना
जयपुर (राजस्थान)

OLD IS GOLD

बच्चों का देश

सितम्बर 2011

खाओ भोजन

राजा शूरसेन को तरह–तरह के पकवान खाने का बहुत शौक था। राजमहल की पाक शाला में देश–विदेश के निपुण रसोइये नियुक्त किए गए थे। वे राजा के लिए रोज नए–नए व्यंजन तैयार करते थे। राजा शूरसेन के लिए भोजन तैयार करने में राजकोष से काफी धनराशि खर्च होती थी, किन्तु वे खर्च की परवाह नहीं करते थे। हाँ, अगर भोजन में नए व्यंजन न हो तो वे सेवकों पर कुपित हो जाते थे। इधर कुछ दिनों से राजा शूरसेन को भोजन में तनिक भी स्वाद न आ रहा था। रसोइये परेशान थे। उनकी समझ नहीं आ रहा था कि आखिर राजा के लिए ऐसा भोजन कैसे तैयार करें कि ये स्वाद लेकर खा सके।

राजवैद्य से सलाह ली गई। वे बोले– "जरूर यह किसी गम्भीर बीमारी का संकेत हैं।'' राजवैद्य ने राजा शूरसेन की नाड़ी की जाँच की। औषधियाँ दी, किन्तु राजा की स्थिति जस की तस रही। वे जो भी खाते उन्हें स्वाद रहित लगता। देश–विदेश से योग्य चिकित्सक बुलाए गए। वे भी राजा को भोजन स्वाद रहित लगने का कारण न जान सके। ज्योतिषियों ने ग्रह–नक्षत्रों की स्थिति देखी। उपाय बताए, लेकिन सब व्यर्थ। अब राजा शूरसेन ठीक से भोजन भी न कर पाते थे। वे कमजोर होने लगे। राजकाज भी मंत्रियों के हवाले कर दिया। राजा की हालत बिगड़ती देखकर रानी मीनाक्षी चिन्तित हो गई। काफी सोच–विचार किया।

एक दिन रानी मीनाक्षी राजा से बोली– "महाराज! आप राजपथ पर भूखे लोगों को भोजन खिलाया करें, फिर स्वयं भोजन ग्रहण करें।'' ''किन्तु यह काम तो सेवक भी कर सकते हैं फिर मैं भूखों को भोजन क्यों खिलाऊँ?'' राजा ने काफी ना–नुकुर की, लेकिन जब रानी ने काफी आग्रह किया तो वे तैयार हो गए। राजा शूरसेन प्रतिदिन राजपथ पर जाते और जो भी भूखा दिखाई पड़ता अपने हाथों से भोजन परोसते। प्रजाजन चकित थे। कभी राजमहल से बाहर न निकलने वाले राजा शूरसेन में यह परिवर्तन देखकर वे प्रसन्न थे। जब राजा भूखे प्रजाजनों को भोजन खिलाते थे तो वे उन्हें खूब आशीर्वाद देते। धीरे–धीरे राजा को भी यह काम अच्छा लगने लगा था।

एक दिन सचमुच चमत्कार हो गया। राजा ने ज्योंही भोजन का पहला ग्रास मुँह में रखा, उन्हें कुछ अनोखे स्वाद का अनुभव हुआ। वे खूब रस लेकर भोजन करने लगे। राजा आश्चर्य चकित थे। उन्होंने रानी से पूछा– ''बहुत दिनों बाद आज मुझे भोजन में अनोखा स्वाद मिल रहा है, इसका क्या कारण है?'' ''महाराज! गरीब प्रजाजनों को खिलाने से भोजन का स्वाद दुगुना हो गया। फिर राजपथ पर जाने और स्वयं भोजन परोसने से आपका शारीरिक श्रम भी हो गया और आपको भूख का अनुभव होने लगा। भूख लगने लगी तो महाराज भोजन का स्वादिष्ट लगना स्वाभाविक है।

राजीव सक्सेना
मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

नाव कितने चक्कर लगाएगी?

एक नदी बहुत चौड़ी है, किन्तु उसे पार करने के लिए वहाँ बँधी नाव बहुत ही छोटी है। एक बार में केवल एक व्यक्ति तथा दो बालकों को ही ले जा सकती है। तीन व्यक्ति और तीन बालक उस नदी को पार करना चाहते हैं। बच्चो, बताओ भला, कम से कम कितनी बार नाव को इस पार से उस पार जाना–आना होगा?

ललित नारायण उपाध्याय
खण्डवा (मध्य प्रदेश)

(उत्तर पृष्ठ 41 पर)

हिन्दी दिवस

14 सितम्बर

❖ हिन्दी भाषा में लगभग दो लाख चालीस हजार शब्द हैं। मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम आदि देशों की भाषा हिन्दी है। लगभग तैंतीस देशों में हिन्दी पढ़ाई जाती है।

❖ हिन्दी विश्व में सर्वाधिक बोली व समझी जाने वाली भाषा है। यूनेस्को के एक सर्वेक्षण के अनुसार विश्व में लगभग छह हजार भाषाएँ बोली जाती हैं। विश्व की तीन सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाएँ हैं – मंदारिन यानी चीनी, हिन्दी और अँग्रेजी। भारत के अलावा विश्व के 130 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी विभाग है।

टर्रकटम

मैंने नन्हे बालकों से पूछा– "बताओ, वायु का दाब पृथ्वी की सतह पर अधिक होगा अथवा ऊँचे पहाड़ों पर?" अधिकांश बच्चों ने कहा– "वायु दाब ऊँचाई पर अधिक होगा।" उनकी यह धारणा थी कि ऊपर तो खूब वायु होती है, अतः वायु दाब भी अधिक होगा।" मैंने कहा– "नहीं, ऐसा नहीं।''

आओ सुनो एक कहानी – तीन मेढक थे। खेल ही खेल में वे एक–दूसरे पर सवार हो गए। सबसे ऊपर वाला मेढक खुशी से बोला– ''टर्रकटम!" और बीच वाला बोला– "खुशी न गम।'' (एक से दबे हैं तो एक को दबा भी तो रखा है) और सबसे नीचे वाला मेढक बोला– "भई, दबे तो हम।" कहानी सुनाने के बाद मैंने पूछा– "अब बताओ वायु दाब कहाँ अधिक होगा?" तो सबने बताया कि– ''नीचे अधिक वायुदाब होगा क्योंकि नीचे वायुमंडल की सारी वायु की तहों का दबाव होगा जबकि पहाड़ों पर तो वायु दाब बहुत कम होगा।''

रूपनारायण काबरा
जयपुर (राजस्थान)

तसवीर जोडो–

ननकू को कहीं से टॉमी की तसवीर मिल गई..
जिसे पाकर ननकू को शरारत सूझी और झट कैंची से उसने तसवीर के छह टुकड़े कर दिए..
अब दुखी होकर फिर से उनको जोड़ने में जुटा है..क्या आप उसकी मदद करेंगे ?

– राकेश शर्मा राजदीप

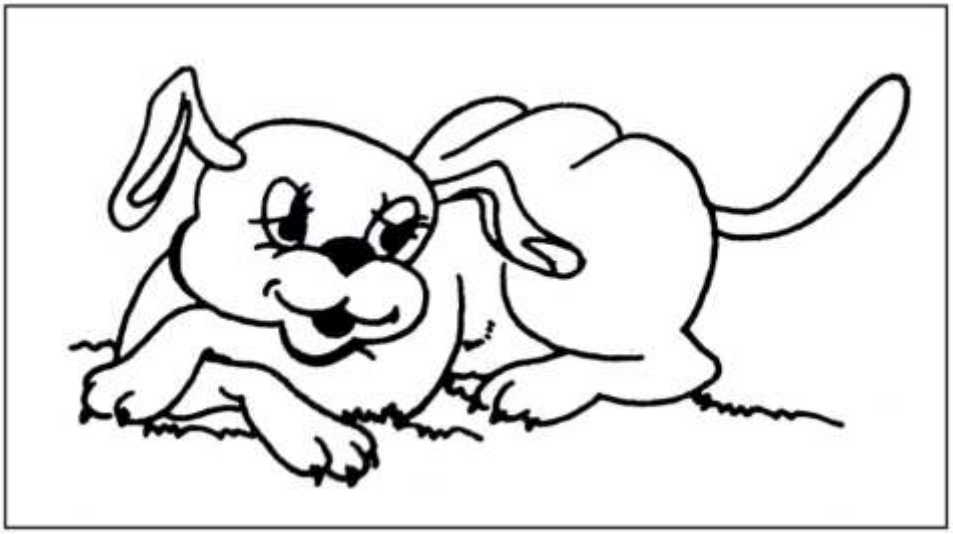

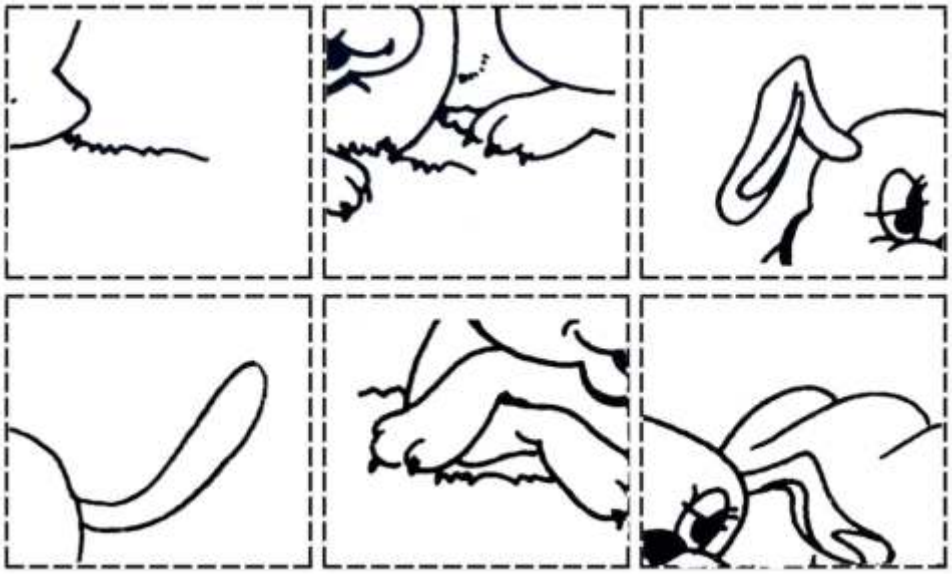

दस सवाल दस जवाब

(1) हिन्दी के इन साहित्यकारों के नाम बताइये।
(2) हिन्दी की वर्णमाला में कितने अक्षर है?
(3) संविधान सभा द्वारा हिन्दी को राजभाषा कब माना गया?
(4) कवि रहीम का पूरा नाम क्या है?
(5) हिन्दी भाषा किस लिपि में लिखी जाती है?
(6) गोदान व गबन पुस्तकों के लेखक कौन थे?
(7) किस कवि को छायावाद का प्रवर्तक कहा जाता है?
(8) 'ढाई आखर प्रेम के, पढ़ै सो पंडित होय' इस पंक्ति के रचयिता कौन थे?
(9) किस साहित्यकार को 'भारत का शेक्सपीयर' कहा जाता है?
(10) मध्यप्रदेश के किस जिले को देश का प्रथम हिन्दी साक्षर जिला घोषित किया गया?

उत्तर इसी अंक में

- गप्पी– पता है मेरे दादाजी के पास इतनी जमीन थी कि सुबह से शाम तक भी घूमों तो भी पूरी जमीन नहीं नाप सकते थे।
  दूसरा गप्पी – मेरे दादाजी के पास इतना बड़ा बाँस था कि वो जब चाहते तब ही बादल में छेद करके पानी बरसा लेते थे।
  पहला– पर यार तेरे दादाजी उस बाँस को रखते कहाँ थे?
  दूसरा– तेरे दादाजी की जमीन पर।
- एक देहाती फौज में बड़े अधिकारी के पास गया और बोला– साहब, मुझे ब्रिगेडियर बना दीजिए। अधिकारी ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा और कहा– क्या तुम पागल हो गए हो।
  देहाती– अच्छा, ब्रिगेडियर बनने के लिए पागल होना जरूरी है।

विशेष – बाल पाठक भी चुटकुले भेज सकते हैं।

बन्दर मामा

बन्दर मामा बाज न आते
दिन भर खाना खाते,
घुड़की देते रहते सबको
छत पर आते–जाते।

चबा लिये फिर कच्चे चावल
गया मसूढ़ा सूज,
दो दाँतों के बीच फँस गया
मामा के तरबूज।

दाँत दर्द से परेशान हो
चीखे सारी रात,
सुई लगाकर चिम्पैजी ने
समझाई कुछ बात।

चक्रधर शुक्ल
कानपुर (उत्तर प्रदेश)

खुशियों की सौगात लुटाती

रंग–बिरंगी तितली आती,
उड़– उड़ फूलों पर मंड़राती।
धीरे–धीरे पंख हिलाकर,
सबके मन को बहुत लुभाती।

पंख कहाँ से रंगवाती है?
मुस्काती, पर नहीं बताती।
झूम–झूम दिखलाकर छवियाँ,
मोबाइल में कैद कराती।

बच्चे दौड़ रहे हैं पीछे,
नहीं किसी की पकड़ में आती।
घर के उपवन में जब घूमे,
खुशियों की सौगात लुटाती।

डॉ. सतीश चन्द्र भगत
बनौली, दरभंगा (बिहार)

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

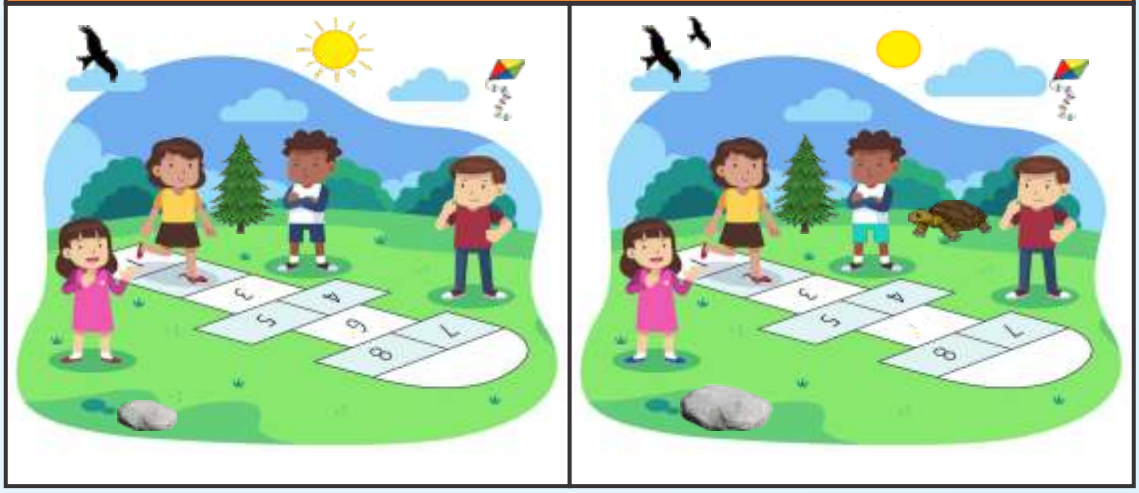

बस एक मिनट

हैरी आज काफी खुश था क्योंकि उसका चचेरा भाई संजय कुछ दिनों के लिए उनके पास आ रहा था। हैरी और संजय में काफी प्यार था। हैरी की एक खास आदत थी कि उसके मम्मी–पापा उसे जब भी कोई काम कहते तो वह झट से कहता– ''बस एक मिनट।'' और फिर वह काम टल जाता था। उसके मम्मी–पापा को उसकी यह आदत बहुत बुरी लगती थी।

हैरी के चाचा जी का लड़का संजय जब उनके पास आया तो हैरी की आदत और बिगड़ चुकी थी। वह कोई काम होता तो संजय से कह देता। संजय मुस्कुराकर वह काम कर देता। हैरी के मम्मी–पापा संजय से कहते– ''अरे बेटा, इसकी बात कम ही माना कर। खुद तो कोई काम करता नहीं। सारा दिन तुम पर ही हुक्म चलाता रहता है।'' एक सुबह हैरी ने संजय से कहा– ''यार मेरा होमवर्क कर दे तुम्हें कोल्ड ड्रिंक पिलाऊँगा और कुरकुरे भी मिलेंगे।'' संजय मुस्कुराया और बोला– ''इसकी जरूरत नहीं।'' संजय ने हैरी का होमवर्क काफी हद तक निपटा दिया था।

हैरी के एक अध्यापक जी उनके घर के पास ही रहते थे। एक दिन वह टहलते–टहलते हैरी के घर आए। हैरी के पापा से उन्हें कोई काम था। उस समय हैरी घर पर नहीं था। वह दुकान से कोल्ड ड्रिंक लेने गया था। अध्यापक जी ने देखा कि एक लड़का बड़ी लगन से होमवर्क कर रहा है।

उन्होंने हैरी के पापा से पूछा– ''यह लड़का कौन है?'' ''जी मेरा भतीजा है।'' अध्यापक जी ने संजय को पास बुलाया और उसके हाथ में पकड़ी कॉपी देख कर बोले– ''बहुत सुन्दर लिखावट है। शाबाश।'' हैरी के पापा ने अध्यापक जी को सच्चाई बताई तो वह बोले– ''हैरी के लिए यह अच्छी बात नहीं है। वह अपने काम खुद क्यों नहीं करता और फिर बात पढ़ाई के होमवर्क की हो

तो और भी गलत है।'' उन्होंने संजय को होमवर्क छोड़ने को कहा और फिर उसे कुछ समझाया।

इतने में हैरी दुकान से लौटा तो अध्यापक जी को देखकर थोड़ा घबरा गया। ''आओ हैरी, लगता है तुम्हें मेरे आने की पहले ही खबर हो गई थी जो मेरे लिए कोल्ड ड्रिंक और कुरकुरे लाए हो?'' ''जी सर!'' हैरी इतना ही कह पाया और अध्यापक जी को नमस्ते कहकर उनके करीब बैठ गया। उसने देखा उसकी कापियाँ व किताबें पास ही बिखरी हुई थीं और संजय रसोई में माँ के साथ हाथ बँटा रहा था।

''पढ़ाई कैसे चल रही है हैरी?'' अध्यापक जी ने प्यार से हैरी के कंधे पर हाथ रखते हुए पूछा। ''सर बहुत बढ़िया।'' हैरी नजरें झुका कर बोला। ''देखूँ तो तुम्हारी कोई कापी।'' अध्यापक जी ने अनजान होकर कहा। हैरी एक कापी उठा लाया और अध्यापक जी को दिखाई। ''अरे वाह हैरी, तुम्हारी लिखावट तो बहुत बढ़िया हो गई है। एक भी गलती नहीं है। शाबाश ऐसे ही पढ़ते रहो। मुझे तुम पर गर्व है।'' हैरी अध्यापक जी से अपनी प्रशंसा सुनकर पहले तो काफी खुश हुआ मगर जल्दी ही उसे अहसास हुआ कि यदि यही लिखावट उसकी खुद की होती तो उसे कितनी सच्ची खुशी होती। लेकिन पढ़ने में उसकी रुचि है ही नहीं। उसे खुद से ग्लानि हो रही थी कि शाबाशी का असली हकदार तो उसका चचेरा भाई संजय है। वह कितना स्वार्थी और झूठा है जो दूसरों का श्रेय चुपचाप लेने लगा है। उसकी आत्मा उसे भीतर से झंझोड़ने लगी थी। उसके मन पर बोझ था कि उसे उसी पल अध्यापक जी को सच्चाई बतानी चाहिए थी।

उसी शाम उसने पापा के मोबाइल से अध्यापक जी को फोन किया और सच्चाई बता दी। इस पर अध्यापक जी हँसते हुए बोले– ''बेटा, मुझे सब मालूम था। तुम्हें बिना समझाए इस बात का अहसास हो यही मैं चाहता था। अब जीवन में यही प्रण करो कि अपना काम खुद करोगे। खुद की मेहनत का अपना ही मजा है। जो दूसरों पर निर्भर रहते हैं जीवन में कभी सफल नहीं हो पाते।

एक बात और, ज्यादा कोल्ड ड्रिंक व कुरकुरे सेहत के लिए हानिकारक होते हैं। फिर बाजार से जो भी लाओ हाथ धोकर ही खाओ। जानते हो न आजकल मौसमी वायरस से स्कूल के कितने बच्चे बीमार हो चुके हैं। आशा है तुम मेरी बातों पर अमल करोगे। खुश रहो।'' अध्यापक जी की समझाई बातों का हैरी पर अच्छा असर हुआ। अब वह अपने काम खुद करने लगा था। उसके मम्मी–पापा भी अब खुश थे।

हरिन्दर सिंह गोगना
पटियाला (पंजाब)

सुडोकू

यह अंकों का जापानी खेल है,
इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ–नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

	6		1		4		5	
		8	3		5	6		
2								1
8			4		7			6
		6				3		
7			9		1			4
5								2
		7	2		6	9		
	4		5		8		7	

उत्तर इसी अंक में

व्हाट्सएप कहानी

एक गरीब विधवा के पुत्र ने एक बार अपने राजा को देखा। राजा को देखकर उसने अपनी माँ से पूछा– ''माँ! क्या कभी मैं राजा से बात कर पाऊँगा?'' माँ हँसी और चुप रह गई। पर वह लड़का तो निश्चय कर चुका था। उन्हीं दिनों गाँव में एक सन्त आए हुए थे तो युवक ने उनके चरणों में अपनी इच्छा रखी।

सन्त ने कहा– ''अमुक स्थान पर राजा का महल बन रहा है, तुम वहाँ चले जाओ और मजदूरी करो। पर ध्यान रखना, वेतन न लेना। अर्थात् बदले में कुछ माँगना मत चुपचाप काम करते रहना।''

वह लड़का गया। वह मेहनत दोगुनी करता पर वेतन न लेता। एक दिन राजा निरीक्षण करने आया। उसने लड़के की लगन देखी। प्रबंधक से पूछा– ''यह लड़का कौन है, जो इतनी तन्मयता से काम में लगा है? इसे आज अधिक मजदूरी देना।''

प्रबंधक ने विनय पूर्वक कहा– ''महाराज! इसका अजीब हाल है, दो महीने से इसी उत्साह से काम कर रहा है। पर हैरानी यह है कि यह मजदूरी नहीं लेता। कहता है मेरे घर का काम है। घर के काम की क्या मजदूरी लेनी?'' राजा ने उसे बुलाकर कहा– ''बेटा! तू मजदूरी क्यों नहीं लेता? बता तू क्या चाहता है?'' लड़का राजा के पैरों में गिर पड़ा और बोला– ''महाराज! आपके दर्शन हो गए, आपकी कृपा दृष्टि मिल गई, मुझे मेरी मजदूरी मिल गई। अब मुझे और कुछ नहीं चाहिए।''

राजा बालक के मधुर व्यवहार से बहुत खुश हुआ और उसे मन्त्री बनाकर अपने साथ ले गया। कुछ समय बाद अपनी इकलौती पुत्री का विवाह भी उसके साथ कर दिया। राजा का कोई पुत्र नहीं था तो कालान्तर में उसे ही राज्य का राजा बना दिया गया। वह लड़का रुपये के लिए कार्य करता, तो मजदूरी ही पाता। निष्काम कर्म किया तो राजा बन बैठा।

दिमागी कसरत

यहाँ दिये गये अँग्रेजी भाषा के शब्दों के मध्य में स्थित ऐसे एक अक्षर को हटाए कि शेष अक्षरों से एक नया शब्द बन सकें। जैसे क्रमांक 7 में से L हटाने पर Back बनता है। अब आप लगाइये अपना दिमाग और कीजिए यह कसरत –

1. Heart	.....	11. Noise	.....
2. Feather	.....	12. Table	.....
3. Monkey	.....	13. Hunt	.....
4. Swing	.....	14. Wheat	.....
5. Three	.....	15. Where	.....
6. Frog	.....	16. Flame	.....
7. Black	.....	17. Shoe	.....
8. World	.....	18. Slave	.....
9. Window	.....	19. Once	.....
10. Powder	.....	20. Auction	.....

प्रकाश तातेड़
उदयपुर (राजस्थान)

उत्तर इसी अंक में

भारत में तिब्बत का अहसास

छत्तीसगढ़ का मैनपाट

दोस्तो! हमारा देश न सिर्फ़ क्षेत्रफल में विशाल है बल्कि इसका हृदय भी विशाल है। हमने दुनिया के कई देशों की संस्कृति, भाषाओं और रीति रिवाजों के साथ वहाँ के निवासियों को भी अपना लिया है। इस बार भारत में तिब्बत का अहसास कराने वाले एक गाँव की बात करें।

पहाड़ी पर बसा गाँव– उत्तरी छत्तीसगढ़ में मैनपाट की पहाड़ी पर बसा है छोटा तिब्बत। मैनपाट अंबिकापुर से करीब 55 किलोमीटर दूरी पर विंध्य पर्वतमाला पर स्थित है। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 3,780 फीट है। टाइगर प्वाइंट मैनपाट में प्रमुख आकर्षण का केन्द्र है। स्थानीय लोगों का कहना है कि कई साल पहले यहाँ बाघ देखे जाते थे, इस वजह से इसका नाम टाइगर पॉइंट पड़ा।

तिब्बती संस्कृति की छाप– यहाँ आने के बाद सैलानियों को बुद्ध की शरण में आने का भी अहसास होता है। ऊँचाई पर स्थित सपाट मैदान और चारों तरफ खुली वादियाँ। बौद्ध भिक्षुओं के शान्त सौम्य चेहरों के साथ कालीन बुनते तिब्बतियों को देखकर ऐसा महसूस होता है कि हम नाथूला दर्रे को पार कर तिब्बत के किसी गाँव में पहुँच गए हैं। छोटे साफ–सुथरे मकान और चारों ओर हरियाली उसकी सुन्दरता बढ़ाती है।

यह पहचान है मैनपाट के तिब्बती और उनके कैंपों की। साल 1962 में तिब्बत पर चीनी कब्जे और वहाँ के धर्मगुरु दलाई लामा सहित लाखों तिब्बतियों के निर्वासन के बाद भारत सरकार ने उन्हें अपने यहाँ शरण दी थी। इसी दौरान तिब्बत के वातावरण से मिलते–जुलते मैनपाट में एक कैंप बसाया गया था, जहाँ तीन पीढ़ियों से तिब्बती शरणार्थी रह रहे हैं। तिब्बतियों के बसे होने की वजह से यहाँ के ज्यादातर मठ–मन्दिरों, खान–पान और संस्कृति में भी तिब्बत की छाप स्पष्ट महसूस की जा सकती है।

धार्मिक प्रवृत्ति के निवासी –यहाँ के बौद्ध मन्दिर में पहुँचकर मन को शान्ति मिलती है। तिब्बती शरणार्थियों की जीवन शैली हर किसी को आकर्षित करती है। यहाँ तिब्बतियों के सात कैंप हैं। इन सातों कैंपों में साठ के दशक में तिब्बतियों द्वारा छोटे–छोटे मकान बनाए गए थे। यहाँ सभी कैंपों में बौद्ध मन्दिर हैं, जहाँ सुबह से लेकर देर शाम तक समाज के बुजुर्ग पूजा–अर्चना में लगे रहते हैं।

मैनपाट के कमलेश्वरपुर, रोपाखार क्षेत्र में स्थानीय लोगों के साथ मिलकर अपने पर्व मनाने वाले तिब्बतियों की पारम्परिक वेशभूषा और वाद्य यंत्र विशेष अवसरों पर ही नजर आते हैं। तिब्बतियों के मकान, घरों के सामने लहराते झंडे और मठ–मन्दिर अनायास ही तिब्बत की याद दिला देते हैं।

देखें पृष्ठ 36...

चूहे जैसा आदमी का जीवन

रैटी चूहा अपने परिवार के साथ कुंकू पंसारी की दुकान में आराम से रहता था। वहाँ उसे ढेर सारा खाने का सामान मिलता था और सुरक्षा भी थी। उनका बिल कुंकू पंसारी की नजरों से दूर था। एक दिन जब कुंकू लोगों को सामान देने में व्यस्त था तो रैटी अपने बिल से बाहर निकल आया और दाल चावल की बोरियों पर उछल कूद करने लगा। तभी उसकी नजर दुकान के बाहर खड़े लोगों पर पड़ी। लोग दुकान के बाहर बने घेरे में दूरी के साथ खड़े हुए थे। सभी ने मुँह पर मास्क और हाथों में दस्ताने पहने हुए थे। यह दृश्य देखकर रैटी इधर उधर देखने लगा कि ये मनुष्यों को क्या हो गया है? जो गर्म मौसम में मास्क और हाथों में दस्ताने पहन कर घूम रहे हैं।

तभी उसने देखा कि घीसामल नामक ग्राहक ने ढेर सारा सामान तुलवाया और उसे ऑटोरिक्शा में लेकर चलता बना। कुंकू का नौकर मंटू दूसरे ग्राहक के लिए सामान लेने आया। दूसरे ग्राहक ने भी एक बोरी चावल और एक बोरी दाल के साथ ही ढेर सारे सामान का ऑर्डर दिया था। मंटू चावल की बोरी लेने उसी ओर आया जिस ओर रैटी चूहा पसरा पड़ा था। तुरन्त ही रैटी वहाँ से हट गया। लगभग सभी ग्राहकों ने आटा, दाल–चावल अधिक से अधिक लिए थे। रैटी हैरान–परेशान था कि अचानक से ग्राहकों ने इतना सामान लेना कैसे शुरू कर दिया ? आखिर ऐसा क्या हो गया है जिससे सभी अपने अपने घरों में इतना सामान भर रहे हैं ?

तभी कुंकू ने टी.वी. ऑन कर दिया। टी.वी. में समाचार आने लगे थे। एंकर बोल रही थी कि भारत में कोरोना मरीजों की बढ़ती हुई संख्या ने पूरे देश को चिन्ताग्रस्त कर दिया है। कोरोना से

बचने के लिए लोग घर पर ही रहें और कम से कम बाहर निकलें।'' रैटी ने खबरें ध्यान से सुनीं। अपने परिवार वालों और मित्रों से उसने सुना तो था कि आजकल पूरी दुनिया में कोरोना नामक एक महामारी ने सभी मनुष्यों को पंगु बना दिया है लेकिन इतना अधिक कि भय से लोग अपने घरों को राशन से भर रहे हैं, ये आज ही देखा था। मौका देखकर रैटी ने गुड़ की डली ली और उसे लेकर बिल में घुस गया।

वहाँ पर उसने अपने परिवार को सब बात बताई। रैटी का बड़ा भाई गैटी बोला– ''हाँ हमें तो स्कूल में ये सब पढ़ा रहे हैं कि कोरोना महामारी ने पूरे विश्व में उथल पुथल मचा दी है। इससे अनेक लोगों की जान गई है।'' रैटी बोला– ''भैया, इस बीमारी के लक्षण क्या होते हैं?'' गैटी बोला– ''इसमें बुखार, साँस लेने में तकलीफ होना, खाँसी, सिर दर्द, चक्कर आना और थकान महसूस होती है। ये बुखार जैसे सामान्य लक्षण है। इसलिए लोग अधिक परेशान हो रहे हैं। इससे भी बड़ी बात यह है कि यह संक्रमित बीमारी है। यदि कोरोना से पीड़ित एक व्यक्ति बाहर निकलता है तो वह अपने इर्द गिर्द के लोगों में उस वायरस को तेजी से पहुँचा देता है। इसलिए बार–बार लोगों को सरकार द्वारा टी.वी. के माध्यम से यह कहा जा रहा है कि वे मास्क और दस्ताने पहन कर बाहर निकलें। एक दूसरे से दूर रहें। बार–बार अपने हाथ धोते रहें।''

सारी बातें सुनने के बाद रैटी बोला– ''भैया, मुझे तो यह महसूस हो रहा है कि अब मनुष्यों की जिन्दगी बिलकुल हम जैसी हो गई है।'' ''वह कैसे'' गैटी के साथ ही माता पिता हैरानी से बोले? ''वह ऐसे क्योंकि जैसे हम खाना इकट्ठा करके रखते हैं वैसे ही अब मनुष्य भी खाना जमा करने में लगा है। हम मनुष्यों को देखते ही दूर भागते हैं कि वे हमें कोई नुकसान न पहुँचा दें, उसी तरह अब एक मनुष्य दूसरे को देखकर दूर भाग रहा है कि कहीं वह उसे कोरोना न दे दे। हम छिपकर रहते हैं, उसी तरह अब मनुष्य भी छिपकर रह रहे हैं। हम भी अधिकतर खाना लेने के लिए बाहर निकलते हैं और मनुष्य भी अब ज्यादातर अपना पेट भरने के लिए ही बाहर निकल रहे हैं। बाकी समय वे अपने घर में ही रहते हैं।''

रैटी की बात सुनकर गैटी और माता पिता बोले– ''कह तो तुम बिलकुल सही रहे हो।'' गैटी की माँ मैटी बोली– ''वाकई अब आदमी चूहे जैसा हो गया है। हमारी तरह अपने घर रूपी बिलों में दुबक कर रह रहा है।'' पिता शैंटी घबरा कर बोले– ''अब इनसान का जीवन सचमुच मुश्किल में पड़ गया है। पता नहीं यह कैसे सुलझेगा?'' गैटी बोला– ''पिताजी यह समय बीत जाएगा। बस मनुष्य कुछ दिन वास्तव में हमारी तरह रहे और प्रकृति के महत्त्व को समझे।''

तभी रैटी बोला– ''मुझे भी मास्क पहनना है। हम लोगों को भी अपनी सुरक्षा रखनी चाहिए। आखिर हम भी तो मनुष्यों के साथ रहते हैं। अगर हमें कोरोना हो गया तो फिर क्या होगा?'' उसकी इस बात पर सभी मुस्कुराने लगे।

रेनू सैनी
नई दिल्ली

'मेरा देश : गाँव विशेष' पृष्ठ 34 का शेष...

बिना भूकम्प हिलती जमीन– मैनपाट में एक खास आकर्षण का केंद्र है, जलजली। यहाँ की जमीन बिना भूकम्प के हिलती है। यहाँ पर अगर जमीन पर उछलते हैं तो जमीन हिलती है। कुदरत का यह करिश्मा बहुत ही अद्‌भुत है।

पानी का बहाव उल्टी तरफ– मैनपाट के "उल्टापानी" में आकर सैलानी काफी अचम्भित हो जाते हैं क्योंकि यहाँ पर पानी का बहाव ऊँचाई की तरफ है। साथ ही यहाँ सड़क पर में न्यूट्रल गाड़ी पहाड़ी की ओर चली जाती है। यहाँ पानी का बहाव विपरीत दिशा में होने के कारण इस जगह का नाम उल्टापानी रखा गया है।

शिखर चन्द जैन
कोलकाता (प.बंगाल)

दशरथ माँझी

फौलादी संकल्प की कथा

बिहार राज्य के गया जिले के गहलौर नामक गाँव में सन् 1934 में मुसहर जाति के एक गरीब भूमिहीन मजदूर परिवार में दशरथ माँझी का जन्म हुआ था। गाँव चारों तरफ से पहाड़ों से घिरा होने के कारण कोई भी सुविधा गाँव में उपलब्ध नहीं हो सकती थी। सबसे नजदीक का अस्पताल भी वज़ीरगंज में ही था। किन्तु जब कोई व्यक्ति अधिक बीमार होता तो उसे पहुँचाना आसान नहीं था क्योंकि पहाड़ों की वजह से बहुत घूम–घामकर ही वहाँ जाया जा सकता था।

दशरथ माँझी ही नहीं गाँव के दूसरे लोग भी पहाड़ पार करके आसपास के गाँवों में मजदूरी करने जाते थे। दशरथ माँझी की पत्नी फागुनी देवी और गाँव की अन्य महिलाओं को पानी लाने के लिए भी रोज–रोज गहलौर पहाड़ पार करना होता था। पहाड़ पार करते समय प्रायः महिलाएँ फिसल कर गिर पड़तीं और न केवल उनका पानी बिखर जाता अपितु चोट भी लग जाती। फागुनी देवी के साथ भी कई बार ऐसा ही हुआ।

यह देखकर दशरथ माँझी को बहुत दुःख होता था। वह पहाड़ का कुछ बिगाड़ तो नहीं सका था लेकिन उसके मन में बार–बार यही ख़याल आता था कि काश! ये पहाड़ यहाँ न होता और गाँव के लोगों का जीवन कुछ आराम से गुज़र जाता। इन्हीं विचारों ने दशरथ माँझी के मन में कुछ करने का एक बीज बो दिया। उसने अपने मन में एक फौलादी संकल्प ले लिया। उसी फौलादी संकल्प को पूरा करने के लिए एक दिन दशरथ माँझी ने अपनी बकरी बेच डाली और छैनी हथौड़ा ख़रीद लाया। उससे अगले दिन सुबह–सुबह छैनी हथौड़ा लेकर दशरथ माँझी गहलौर पहाड़ के पास जा पहुँचा।

गहलौर पहाड़ का तीस फीट ऊँचा और अत्यन्त विस्तृत सीना देखकर किसी को भी दहशत हो सकती थी लेकिन दशरथ माँझी के सीने में तो फौलादी संकल्प हिलोरें मार रहा था अतः वह बेखौफ़ था। पहाड़ के पास जाते ही उसने पहाड़ पर छैनी हथौड़ा चलाना शुरू कर दिया। जंगल की आग की तरह ये बात पूरे गाँव में फैल गई। लोग दशरथ माँझी को अविश्वास से देखकर हँस रहे थे, उसका मज़ाक़ उड़ा रहे थे। कोई उसे पागल तो कोई सनकी बता रहा था।

गहलौर पहाड़ के सीने की कठोर चट्टानें दशरथ माँझी की छैनी से कट–कटकर गिरने लगीं। समय गुजरता रहा और मौसम बदलते रहे लेकिन इन सबसे बेखबर अपनी धुन का पक्का दशरथ माँझी अपने काम में लगा रहा। पहाड़ का सीना चाक होने लगा था। लोग अब दशरथ माँझी को अविश्वास से देखकर हँसते नहीं थे, अपितु उसकी प्रशंसा करते थे। उसे सहयोग देने की बात करते थे।

इसी दौरान पत्नी फागुनी देवी बीमार पड़ी। वजीरगंज अस्पताल ले जाते समय रास्ते में ही उसकी मृत्यु हो गई। इससे भी दशरथ माँझी के संकल्प में कोई अन्तर नहीं आया। पत्नी की मृत्यु से उपजे दुःख से उनका संकल्प और अधिक दृढ़ हो गया। पहले वह अकेले ही इस काम में लगे थे लेकिन फागुनी देवी की मृत्यु के बाद भी पूरे जोश

देखें पृष्ठ 40...

दुर्लभ पुष्प
ब्रह्मकमल

पर्वतराज हिमालय की ऊँचाइयों में खिलने वाला पुष्प– ब्रह्मकमल आज दुर्लभ होता जा रहा है। वैसे तो दुनिया की सबसे ऊँची हिमालय पर्वत श्रृंखला में करीब 3500 फूल–पौधों की प्रजातियाँ पाई जाती है। पर ब्रह्म कमल सबसे अलग व पवित्र फूल माना जाता है। पवित्र बद्रीनाथ मन्दिर में ब्रह्मकमल चढ़ाकर ही पूजा की शुरुआत आज भी की जाती है। ब्रह्मकमल, का अपना विशेष स्थान व सौन्दर्य है। हिमालय में 15000 फीट की ऊँचाई पर ब्रह्मकमल खिलता है। यह फूल पानी में नहीं झाड़ी के रूप में पर्वतों पर मिलता है। इसका वैज्ञानिक नाम सॉसुरिया ऑब्वेलेटा (Saussurea Obvallata) है।

फूल झिल्ली मय व छोटी नाव के आकार का होता है। छोटे–छोटे वृत्तों पर भूरे–पीले रंग के रोओं से युक्त, जामुनी या नीले रंग के फूल खिलते हैं। वैसे कमल जल व कीचड़ में उगने वाला फूल है किन्तु ब्रह्म कमल बर्फ में खिलता है। इसका सौन्दर्य दर्शकों को बरबस ही आकर्षित कर लेती है। मोहक सुगन्ध व सुन्दरता के कारण ही इसे भगवान बद्रीनाथ को समर्पित किया जाता है। इसकी रोमहीन, कटावदार पत्तियाँ 20 सेंटीमीटर तक लम्बी होती है जबकि ब्रह्मकमल का पौधा मात्र डेढ़ या दो फीट ही ऊँचा होता है।

ब्रह्मकमल की जड़ें, पत्तियाँ व पुष्प, अनेक औषधियों में प्रयोग किए जाते हैं। वैज्ञानिकों की मान्यता है कि आज से 20 करोड़ वर्ष पहले हिमालय पर्वत की संरचना हुई थी। भारत में हिमालय 2400 किलोमीटर के दायरे में है, जबकि इससे भी अधिक हिस्सा चीन में है। हिमालय का प्राकृतिक सौन्दर्य सदियों से ऋषि, मुनियों, सैलानियों को लुभाता रहा है। ब्रह्मकमल के अलावा ट्रिमुला के चरक गुलाबी पंखुड़ियों वाले चार दलीय पुष्प, रोडो–डेन्डोस के सफेद, लाल व पीले रंगों वाली किस्में, कान्तारसन (पोसकर) आदि फूल भी ब्रह्मकमल के फूलों के आस–पास ही खिलते हैं।

कोबरा लिली का फूल भी 15000 फीट की ऊँचाइयों पर खिलता है। दुर्लभ नीले रंग की नीलम नाम से विख्यात कान्ता का फूल दूर से ही आकर्षित कर लेता है किन्तु ब्रह्मकमल की तो बात ही और है। संस्कृत साहित्य में ब्रह्मकमल को परम पवित्र पुष्प माना गया है।

शिवचरण चौहान
कानपुर (उत्तर प्रदेश)

दोस्ती की नींव

रात का अंधेरा दूर हो चला था और अब आसमान पर धीरे–धीरे सूरज की लालिमा छाने लगी थी। सुबह होते ही सभी लोग उठकर अपने–अपने दैनिक कामों में लग गए। जो बच्चे अब बड़े हो गए थे और स्कूल जाने लगे थे, उन्हें उनके माता–पिता जगाकर तैयार करने लगे। बेचारे बच्चे भी अपनी–अपनी आँखें मलते हुए उठे और स्कूल जाने के लिए तैयार होने लगे। बारह वर्षीय दीनू भी नहा–धोकर तैयार हुआ और नाश्ता करके पीठ पर बस्ता टाँग स्कूल के लिए चल पड़ा। उसका स्कूल घर से लगभग तीन किलोमीटर दूर था। नहर के किनारे–किनारे चलता हुआ वह अपने स्कूल जा पहुँचा और वहाँ बेंच पर बैठकर अपने मित्रों के आने का इन्तजार करने लगा।

तभी उसने देखा कि उसका दोस्त प्रकाश खुशी से उछलता हुआ और दौड़ता हुआ उसके पास चला आ रहा है। आते ही प्रकाश दीनू से बोला– "अरे यार, दीनू! अब मैं अपने माता–पिता के साथ शहर रहने जा रहा हूँ। अब मैं न तो यहाँ गाँव में रहूँगा और न ही इस स्कूल में पढ़ाई करूँगा। अब मैं शहर के ही किसी अच्छे स्कूल में दाखिला लूँगा, क्योंकि मेरे पिताजी अब शहर में नौकरी करने लगे हैं और वे हम सबको अपने साथ शहर ले जा रहे हैं।" प्रकाश की ये बातें सुनकर दीनू बहुत उदास हो गया।

प्रकाश उसका सबसे पक्का दोस्त था। वे दोनों एक–दूसरे से बहुत प्रेम करते थे और साथ–साथ पढ़ते व खेलते थे। वैसे दीनू से दूर होने का दुःख तो प्रकाश को भी था, लेकिन वह शहर जाने के लिए बहुत उत्साहित भी था।

इसीलिए उसके चेहरे पर दुःख से ज्यादा खुशी झलक रही थी।

दीनू को तो मन ही मन बहुत पीड़ा हो रही थी, लेकिन फिर भी उसने बनावटी खुशी दिखाते हुए कहा– "अरे वाह! अब तो तुम शहर जाकर साहब बन जाओगे और फिर मुझे तो बिलकुल भूल ही जाओगे।" प्रकाश ने दीनू को गले लगाते हुए कहा– ''अरे नहीं यार, अपनी दोस्ती इतनी कच्ची नहीं है कि हम एक–दूसरे को भूल जाएँ। चाहे हम भले ही एक–दूसरे से दूर हो जाएँ, लेकिन हमारे दिल कभी एक–दूसरे से दूर नहीं हो सकते। हमारी ये दोस्ती हमेशा अटूट रहेगी।''

कुछ दिनों के बाद प्रकाश अपने माता–पिता के साथ गाँव छोड़कर शहर चला गया और वहीं एक अच्छे स्कूल में दाखिला लेकर पढ़ने लगा। बड़ा होकर वह डॉक्टर बनने के लिए मेडिकल की पढ़ाई करने लगा। दीनू भी कस्बे के कॉलेज से अपनी पढ़ाई पूरी कर रहा था। धीरे–धीरे समय बीतता गया और दोनों अपने–अपने कामों में लग गए। दीनू ने अपने पूर्वजों के काम खेती–किसानी को ही अपने काम–धंधे के रूप में चुना। उसने कड़ी मेहनत और नई तकनीकों के प्रयोग से अपने पुरखों की खेती को और अधिक विकसित कर दिया और अब खेती से वह अच्छी आमदनी करने लगा था।

एक दिन दीनू के पिता बीमार पड़ गए तो वह अपने पिता को पास के कस्बे में बने एक अस्पताल में इलाज के लिए ले गया। लेकिन जब वह डॉक्टर साहब के केबिन में उनके सामने पहुँचा तो उन्हें देखकर अवाक रह गया। यह डॉक्टर तो उसका वही बचपन का दोस्त प्रकाश था। प्रकाश ने भी जब दीनू को देखा तो वह अपनी कुर्सी से उठकर खड़ा हो गया और दीनू के पास जाकर उसे गले से लगा लिया।

दीनू ने प्रकाश से पूछा– "प्रकाश! तुम इतनी मेहनत करके इतना पैसा खर्च कर डॉक्टर बने हो, फिर शहर का आराम छोड़कर इस कस्बे के अस्पताल को ही क्यों चुना?" प्रकाश ने कहा– "मित्र! जैसे तुम ऊँची शिक्षा लेने के बाद भी अपने परिवार के काम से जुड़े रहे, उसी तरह मैं भी अपनी शिक्षा और ज्ञान का सदुपयोग गरीबों और जरूरतमन्दों की सेवा के लिए करना चाहता हूँ। आखिर हम दोनों एक–दूसरे के दोस्त हैं तो हमारे विचार भी आपस में मिलते–जुलते ही होंगे ना।'' दीनू उसकी इन बातों को सुनकर बहुत खुश हुआ। आज उसे उसका पुराना दोस्त बिलकुल खरे सोने के रूप में उसे वापस मिल गया था। उसे अपनी दोस्ती पर नाज हो आया।

रंजना मिश्रा
कानपुर (उत्तर प्रदेश)

'दशरथ मांझी' पृष्ठ 37 का शेष...

के साथ दशरथ माँझी को काम में जुटा देख अन्य लोग भी उसकी सहायता को आने लगे।

आख़िर वो दिन भी आ पहुँचा जिसका बेसब्री से इन्तजार था। बाईस साल की अथक मेहनत के बाद पहाड़ के सीने को चीरता हुआ एक रास्ता दूसरे गाँव तक निकल आया। गहलौर से अमेठी गाँव तक तीस फीट चौड़ा और साढ़े तीन सौ फीट से ज्यादा लम्बा रास्ता बन चुका था। गहलौर से वजीरगंज की दूरी जो पहले अस्सी किलोमीटर से भी अधिक थी अब मात्र तेरह किलोमीटर रह गई थी। लोग खुश थे। जो लोग पहले दशरथ माँझी का मजाक उड़ाते थे, आज उसके सामने सिर झुकाकर खड़े थे। सब जगह उसकी प्रशंसा हो रही थी।

जब भी कोई व्यक्ति बड़ा–सा कोई काम अपने हाथ में लेता है तो यही होता है। पहले लोग अविश्वास से देखते हैं, मजाक उड़ाते हैं। कुछ समय बाद लोगों का सहयोग मिलना प्रारम्भ हो जाता है। पहल करने वाले का जीवन लोगों के लिए आदर्श और प्रेरणास्पद बन जाता है।

सीताराम गुप्ता
दिल्ली

पढ़ो और जानो

इन प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में हैं, आपको उन्हें ढूँढ़ना है।

1. डॉ राधाकृष्णन का जन्मदिवस किस रूप में मनाया जाता है?
2. दशरथ माँझी के जीवन से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
3. हिन्दी को राजभाषा का दर्जा कब दिया गया ?
4. गोविन्द बल्लभ पंत के किस नाटक में शराब के नुकसान बताये गये ?
5. मुस्कान ने सियार से मुकाबला कैसे किया ?
6. मानव शरीर की कार्य प्रणाली .....से भी अधिक विकसित, व्यवस्थित और जटिल है। उपयुक्त शब्द भरें।
7. हैरी की कौन सी आदत अच्छी नहीं थी ?
8. नीलकंठ पक्षी किन राज्यों का राज्य पक्षी है ?
9. लन्दन की अदिति ने क्या विशेष काम किया ?
10. दीनू और प्रकाश की सोच में क्या समानता थी ?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) रामधारी सिंह दिनकर (ब) सुमित्रा नन्दन पंत (स) हरिवंशराय बच्चन (द) सुभद्रा कुमारी चौहान (2) 46 (3) 14 सितम्बर, 1949 (4) अब्दुर्रहमान खानखाना (5) देवनागरी (6) मुंशी प्रेमचन्द (7) जयशंकर प्रसाद (8) कबीरदास (9) कालिदास (10) नरसिंहपुर जिला

अन्तर ढूँढ़िए

(1) लड़की की जूती का रंग अलग (2) पत्थर का आकार बड़ा (3) सूरज की किरणें गायब (4) लड़के का हाफ पेन्ट का रंग अलग (5) एक पक्षी अतिरिक्त (6) नम्बर 6 गायब (7) कछुआ अतिरिक्त (8) बादल का आकार बड़ा

दिमागी कसरत

(1) Heat (2) Father (3) Money (4) Sing (5) Tree (6) Fog (7) Back (8) Word (9) Widow (10) Power (11) Nose (12) Tale (13) Hut (14) What (15) Were (16) Fame (17) She (18) Save (19) One (20) Action

बूझो तो जानें

(1) पहाड़ (2) नदी (3) पेड़ (4) इन्द्रधनुष (5) समुद्र

नाव कितने चक्कर लगाएगी ?

पहली बार एक व्यक्ति व दो बालक उस पार जायेंगे। दूसरी बार एक बालक नाव को वापस लेकर आयेगा। तीसरी बार नाव एक व्यक्ति व दो बालकों को लेकर उस पार जायेगी। चौथी बार पुनः एक बालक नाव को उस पार लायेगा। पाँचवी बार सभी व्यक्ति उस पार पहुँच जायेंगे। इस प्रकार नाव को पांच बार जाना आना होगा।

वर्ग पहेली

1 स	2 म	को	3 ण		4 ति	5 रं	6 गा
7 मा	ह		मो		8 ल	क	ड़ी
9 प	त्ता		10 का	न			वा
न		11 सू	र		12 च	13 म	न
		र		14 श्री		हा	
15 अ	16 व	सा	द		17 स	म	18 ता
	19 र	ग		20 स	मा	हि	त
21 अ	ना	र			22 स	म	

सुडोकू

9	6	3	1	7	4	2	5	8
1	7	8	3	2	5	6	4	9
2	5	4	6	8	9	7	3	1
8	2	1	4	3	7	5	9	6
4	9	6	8	5	2	3	1	7
7	3	5	9	6	1	8	2	4
5	8	9	7	1	3	4	6	2
3	1	7	2	4	6	9	8	5
6	4	2	5	9	8	1	7	3

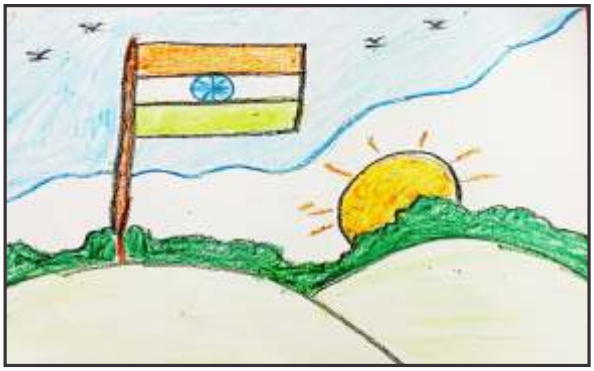

वाणी चोरड़िया, केजी 1, कोलकाता

आयशा लोहिया, कक्षा 7, राजसमन्द

महक प्रज्ञा बोथरा, कक्षा 9, दिल्ली

जयशंकर, कक्षा 6, बीकानेर

मेरे प्रिय अध्यापक

मेरे पसन्दीदा टीचर फिजिक्स पढ़ाते हैं जिनका नाम अभिनय राय सर है। मुझे उनके पढ़ाने के तरीके बहुत पसन्द है। मेरा सबसे कमजोर विषय गणित है, जिसमें मुझे कभी अच्छे अंक नहीं आए। जब तक मैं स्कूल से पढ़ रही थी, तब तक मैं इस विषय से भागती रही। पर जब मैंने अभिनय सर से गणित की पढ़ाई की तो मुझे गणित आने लगी है। उनका अनूठे तरीके से समझाना मुझे भा गया। भले ही मेरे गणित में अंक अच्छे न आए हो फिर भी अब मुझे सर की वजह से गणित पढ़ने में मजा आने लगा। सर सिर्फ सिलेबस का ही नहीं पढ़ाते हैं बल्कि कुछ एक्स्ट्रा ज्ञान या फिर बोनस प्रश्न व कॉन्सेप्ट भी सिखाते हैं और ऐसी छोटी–छोटी ट्रिक जो मैंने आज से पहले कभी नहीं सीखी। वह हर वीडियो में सबसे पहले हमारा गणित के प्रति आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए कुछ लाइन सुनाया करते हैं और अन्तिम कक्षा में गाने सुनते हैं। वह चाहते हैं कि हम भीड़ का हिस्सा बनने की जगह अपना समाज में स्थान निर्धारित करें। सर पूरी मेहनत के साथ हर एक प्रश्न सोल्व करते हैं। अगर हमें फिर भी समझ में नहीं आए तो वापस समझाते हैं। हमारे लिए अनेक बार खुशी से रिपीट करते हैं और इस पर ध्यान देते हैं कि हर बच्चे को हर प्रश्न आ जाए। जिन बच्चों की कैलकुलेशन कमजोर थी उनके लिए सारणी सिखाई। वह हर प्रश्न हल करने के लिए बहुत ही आसान ट्रिक लाते हैं। वह हमारे डाउट्स को अच्छी तरह से पूरा करते हैं। मैं उनकी हर क्लास का वेट करती हूँ। मैं उन्हें धन्यवाद कहना चाहती हूँ क्योंकि उन्होंने मेरे लिए गणित की पढ़ाई आसान बनाई।

प्रिशा चौखड़ा, कक्षा- 9, थाने महाराष्ट्र

शिक्षक दिवस : 5 सितम्बर

डिम्पल

अंजु कुमारी

ममता कुँवर

रानुका

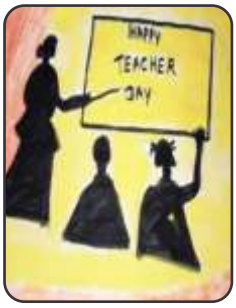

हिना गर्ग

करीना गेहलोत

रिंकू गेहलोत

पुष्पा

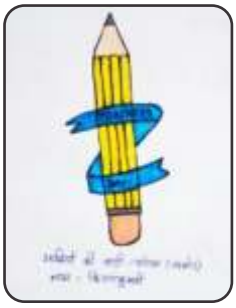
किरण कुमारी

रिंकू

सिम्पू

हिना

सरोज

: सामग्री सौजन्य :
आई. आई. एफ़. एल. फाउंडेशन द्वारा
गांवों में संचालित सखियों की बाड़ी
केंद्र, ब्लॉक- जालौर

खुशी

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

परिवार में सभी शतरंज के खिलाड़ी

राजस्थान के पाली शहर में एक परिवार चेस यानी शतरंज का ग्रेंड मास्टर है। दादा, बेटा और पोता शतरंज के खिलाड़ी है। वे कई प्रतियोगिताओं में उम्दा प्रदर्शन कर चुके हैं। दुर्गा कॉलोनी निवासी रामेश्वर लाल कुमावत ने शिक्षकों और बुजुर्गो को शतरंज खेलते देखा तो उन्होंने भी शतरंज सीख लिया। बाद में बच्चों और पोतों को भी सिखा दिया। उनके छह बेटे, पाँच पोते और छह पोतियाँ है। सभी चेस के खिलाड़ी है। घर में जब भी वे फुर्सत में होते हैं, शतरंज की बिसात बिछ जाती है। बहुएँ भी शतरंज खेलती है।

एकता व समता की अनूठी रसोई

भीलवाड़ा (राजस्थान) में दाउदी बोहरा समाज समता व एकजुटता की मिसाल है। यह समाज अपने धर्मगुरु की सीख का 12 साल से नियमित पालन कर रहा है। समाज की अपनी रसोई है, जिसमें शाम का भोजन एक साथ बनता है। रसोई से तैयार टिफिन समाजजनों के घरों तक पहुँचाएँ जाते हैं। इस राशन पानी का इन्तजाम समाज अपने स्तर पर करता है। धर्मगुरु की सीख थी कि समाज में सभी बराबर है। समाज का हर व्यक्ति एक दिन में एक समय एक जैसा भोजन ग्रहण करेगा तो ऊँच-नीच का भेद नहीं रहेगा।

एक भी दिन स्कूल नहीं छोड़ा, 50 देश घूमी बच्ची

लंदन की भारतीय मूल की 10 वर्षीय अदिति अपने माता-पिता के साथ अब तक 50 देशों की यात्रा कर चुकी है, वह भी बिना स्कूल का एक भी दिन गँवाए। वह माता-पिता के साथ अब तक यूरोपीय देशों के अलावा नेपाल, सिंगापुर, थाइलैंड की यात्रा कर चुकी हैं। वे घूमने के लिए शुक्रवार को स्कूल छूटने के बाद जाते और रविवार रात तक लौट आते। कभी सोमवार सुबह आना हुआ तो एयरपोर्ट से सीधे स्कूल भेजते थे।

दुनिया की सबसे बड़ी ऑफिस इमारत

गुजरात के सूरत में डायमंड बूर्स नाम की इमारत दुनिया की सबसे बड़ी ऑफिस बिल्डिंग बनकर तैयार हो चुकी है। पिछले 80 साल से दुनिया की सबसे बड़ी ऑफिस बिल्डिंग का खिताब अमरीकी रक्षा मंत्रालय के दफ्तर पेंटागन के नाम था। सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक अब यह खिताब सूरत के डायमंड बूर्स के नाम होगा।

खारदुंगला दर्रे को पार कर बनाया विश्व रिकॉर्ड

उदयपुर के दिव्यांग डॉ अरविंदर सिंह जो 80% विकलांग है, उन्होंने लेह लद्दाख के खतरनाक खारदुंगला दर्रे को पार कर लिया है। इन्होंने इसे पार करते ही विश्व रिकॉर्ड अपने नाम किया है। यहीं नहीं लद्दाख के राज्यपाल ने उन्हें सम्मानित करते हुए प्रमाण पत्र सौंपा है। डॉ. अरविंदर सिंह ने बताया कि खारदुंगला ट्रेक के एक तरफ पहाड़ी तो दूसरी तरफ गहरी खाई है। अभी हिमालय में बारिश से काफी परेशानियाँ आ रही है। लैंड स्लाइडिंग की घटनाएँ हो रही है। उन्होंने लेह से खारदुंगला का यह 42 किलोमीटर का ट्रैक स्क्वाड बाइक से पूरा किया है।

दुनिया की पहली फ्लाइंग कार

केलिफोर्निया की कम्पनी एल्फ एरोनॉटिक्स ने दुनिया की पहली फ्लाइंग कार बनाई। यह इलेक्ट्रिक कार चलने के अलावा आसमान में उड़ान भर सकती है। कार की कीमत 2,99,900 डॉलर (करीब 2.46 करोड़ रुपए) है। इसका उत्पादन 2025 के आखिर में शुरू होने की उम्मीद है।

Bal Kalam

My Favourite Teacher

There are many teachers in my school. But my favourite teacher is Ritesh sir. He is 37 years old. He is tall, fair and very cheerful person. He is also very punctual, disciplined and honest person. He teaches us maths. He explains us each and everything in a good and simple way. I was taught maths by many teachers but his teaching method is very unique thats why I like him.

He never gets angry when we make mistakes. He gives us simple and easy tricks to solve difficult question. We never feel bored in his class. He listens carefully all the student's problem. I respect all the teachers but Ritesh sir is the best teacher for me.

Arohi Maheswari
Class 5, Chittorgarh

Bachchon Ka Desh

In the realm of literature, a gem we've found, Bachchon Ka Desh magazine, renowned. Its pages filled with stories, both old and new, Captivating young minds, painting dreams to pursue. Words dance like fairies, mesmerizing the eyes, Igniting imaginations, soaring to the skies.

Education intertwined with joy and delight, Learning becomes an adventure, every page a new height. Illustrations vivid, a feast for the soul, Colorful strokes of art, weaving tales untold. Characters leap to life, upon the paper they reside, Transporting young readers on a magical ride. Bachchon Ka Desh, a beacon of knowledge and fun, expanding young horizons, inspiring everyone.

Its essence embraced, like a treasure to hold, enriching young minds, making them bold. So let the words flow and the stories unfold, Bachchon Ka Desh, a masterpiece untold. For in its pages lies a world so vast, Where dreams take flight, forever to last.

Harmeet Class 7
Yamuna Nagar(Har.)

जीवन विज्ञान के प्रयोग

हमारे शरीर की सबसे छोटी इकाई को 'कोशिका' (Cell) कहते हैं। कोशिकाओं का निर्माण भी जीव द्वारा ही किया जाता है। कोशिकाएँ विभाजित होकर बढ़ती जाती हैं। मानव शरीर में कोशिकाओं की संख्या लगभग 600 खरब है। ये कोशिकाएँ विभिन्न प्रकार की होती हैं। कोशिकाओं की अपनी एक निश्चित भीतरी संरचना है। एक कोशिका में कोशिका झिल्ली, कोशिका द्रव्य, केन्द्रक, राइबोसोम, लाइसोसोम, माइटोकॉन्ड्रिया, गॉल्जी बॉडी, क्रोमोसोम इत्यादि भाग होते हैं। प्रत्येक भाग के अपने–अपने निश्चित कार्य हैं। उदाहरण के लिए, माइटोकॉन्ड्रिया ऊर्जा उत्पन्न करता है जिससे शरीर विभिन्न कार्य करता है।

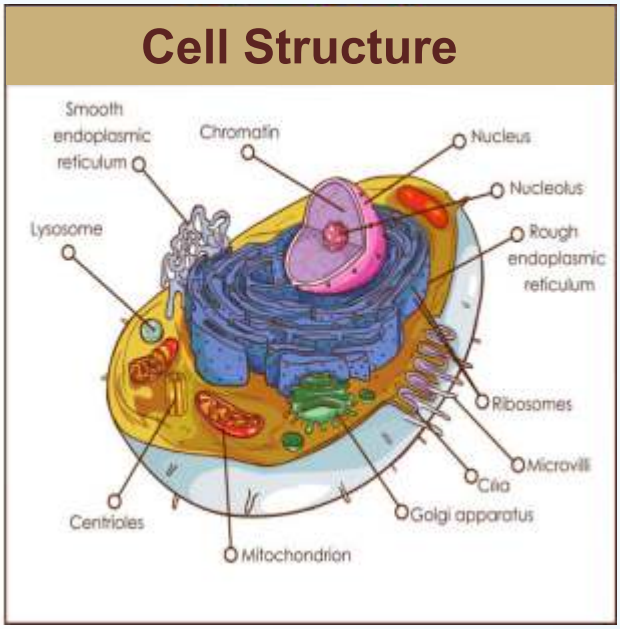

कोशिकाओं में ही शरीर के निर्माण का नक्शा छिपा रहता है। इसे क्रोमोसोम (गुणसूत्र) कहते हैं। इसी नक्शे के अनुसार कोशिकाओं से ऊतक, ऊतकों से हड्डियाँ, मांसपेशियाँ, चमड़ी तथा अन्य अंगों का निर्माण होता है। विभिन्न अंग (Organ) मिलकर अंग–तंत्र (System) बनाते हैं और सभी अंग–तंत्र मिलकर मानव शरीर की रचना करते हैं। प्रत्येक मनुष्य की शारीरिक–संरचना अलग होती है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की कोशिका में विभिन्न गुणसूत्र होते हैं।

शरीर की भीतरी बनावट

मानव शरीर में विभिन्न तंत्र होते हैं जैसे– अस्थि तंत्र, मांसपेशी तंत्र, श्वसन तंत्र, पाचन तंत्र, रक्तसंचार तंत्र, तंत्रिका तंत्र, उत्सर्जन तंत्र, अंतःस्रावी ग्रंथि तंत्र आदि। ये सभी तंत्र मिलकर शरीर का उचित रूप में संचालन करते हैं। प्रत्येक तंत्र के विभिन्न और विशेष कार्य होते हैं। सभी तंत्र एक–दूसरे पर निर्भर होते हैं। बाहरी ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमारे शरीर में पाँच ज्ञानेंद्रियाँ होती हैं। अंगों तथा इंद्रियों के उचित मेल से ही हमारा शरीर विविध कार्य करता है।

आँखें जो कुछ भी देखती हैं, उसका प्रतिबिंब वह मस्तिष्क को स्थानान्तरित करती हैं। इसी तरह कान सुनकर, नाक सूँघकर, जीभ चखकर और त्वचा स्पर्शकर मस्तिष्क को सूचनाएँ पहुँचाती हैं। मस्तिष्क इन सूचनाओं के अनुसार जो भी कार्य किया जाता है उस पर तुरन्त उचित कार्रवाई का निर्देश सम्बन्धित अंगों को देता है। सम्बन्धित अंग मस्तिष्क द्वारा भेजे गए निर्देशों का पालन करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। हम कह सकते हैं कि मानव–शरीर की कार्य प्रणाली सुपर कंप्यूटर से भी अधिक विकसित, व्यवस्थित और जटिल है।

तो फिर..

चित्रकथा-

राजा को एक साधु ने उपहार दिया.
यह दिव्य सेव है राजन् इसे खाकर आप अमर हो जाएंगे.
तभी राजा के मसखरे ने झपट्टा मारकर वह सेव छीना और खा गया.
इस दुष्ट को हाथी के पैरों के नीचे कुचल कर मार दिया जाए...
पर मैं तो अब अमर हूं राजन्..
बकवास.. मैं नहीं मानता कि एक फल खाकर कोई अमर हो सकता है...
तो फिर सेव खाने के लिए मुझे मृत्युदंड क्यों राजन?..
संकेत गोस्वामी, जयपुर (राज.)

किड्स कॉर्नर

Write 'b' for big objects and 's' for small objects

– वेणु वल्लियाथ

रंग भरो

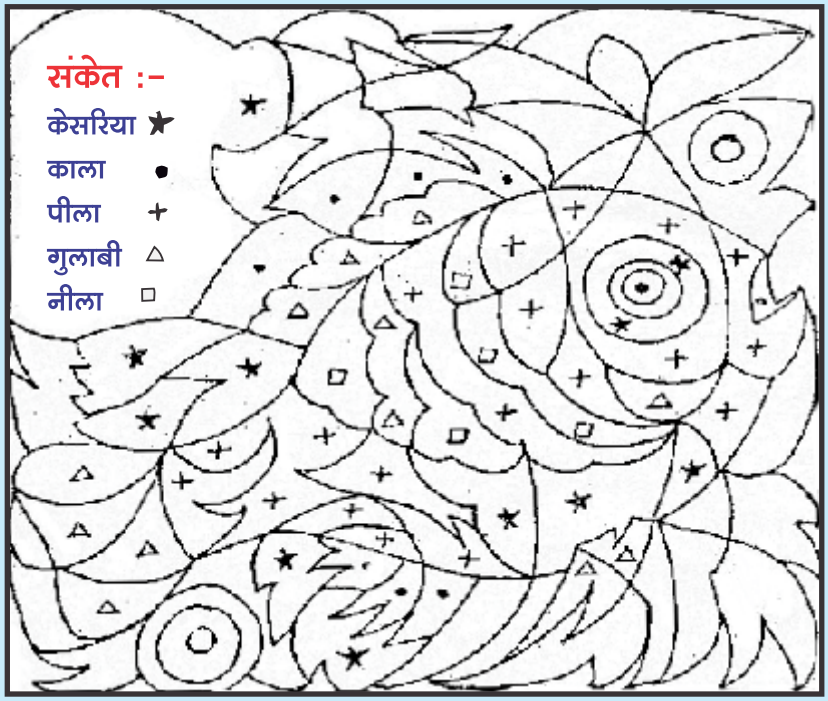

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC International

Celebrating 33 YEARS 1989-2022

AGC

AkashGanga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom,
Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur,
New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai
Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता
को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान
ANUVRAT
CREATIVITY
CONTEST 2023
मुख्य विषय : असली आजादी अपनाओ
प्रतियोगिताएं
लेखन
चित्रकला
गायन
भाषण
कविता
राष्ट्रीय स्तर पर आकर्षक पुरस्कार
15 राज्य
200 शहर
1 लाख बच्चे
शीघ्र
आ रहा है...
अणुविभा
अणुव्रत
विश्व भारती
सोसायटी
सम्पर्क करें :
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
head.office@anuvibha.org +91 91166 34515, delhi@anuvibha.org +91 91166 34512
jeevan.vigyan@anuvibha.org +91 91166 34514
राष्ट्रीय संयोजक - श्री राजेश चावत 91106 13732

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

"शिक्षा जीवन का एक महत्त्वपूर्ण संस्कार है परन्तु अपने आप में वह साध्य नहीं है। अतः शिक्षा का स्वतन्त्र मूल्य नहीं है, वह जीवन मूल्यों के साथ जुड़कर ही मूल्यवान बनती है। शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए कि संस्कारवान व्यक्तित्व का निर्माण हो सके। इसके लिए परम आवश्यक है कि शिक्षा जीवन मूल्यों के साथ जुड़ें। यदि हम शिक्षा के इस स्वरूप को क्रियान्वित कर पाने में सफल होते हैं तो हमें मानना चाहिए कि शिक्षा के सही स्वरूप को अंगीकार किया है।"

डॉ. एस. राधाकृष्णन

जन्म : 05 सितम्बर 1888
निधन : 17 अप्रैल 1975

भारत के प्रथम उप-राष्ट्रपति और द्वितीय राष्ट्रपति रहे डॉ. राधाकृष्णन भारतीय संस्कृति के संवाहक, प्रख्यात शिक्षाविद, महान दार्शनिक और एक आस्थावान विचारक थे। उन्हें सन् 1954 में भारत सरकार ने सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से अलंकृत किया था। उनका जन्मदिन भारत में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। आपका जन्म मद्रास के चित्तूर जिले के तिरुत्तनी ग्राम के एक तेलुगुभाषी ब्राह्मण परिवार में हुआ था।